SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

चिनार ध्वनि

छठा एवं सातवाँ संयुक्तांक

वर्ष 2025 एवं 2026



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

एवं

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर

ऑडिट दिवस-2025





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

चिनार ध्वनि

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा व हकदारी)
एवं
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर की संयुक्त हिंदी पत्रिका

अंक	:	छठा एवं सातवाँ संयुक्तांक
प्रकाशक	:	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) एवं कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा
मुख्य पृष्ठ	:	डल झील
अंतिम पृष्ठ	:	हस्त निर्मित चित्र
संपर्क सूत्र	:	हिंदी अनुभाग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी/लेखापरीक्षा), जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर

चिनार ध्वनि-परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री जे.पी.एन. सिंह

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

श्री एस. सुनील राज

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

परामर्शदाता

श्री मुकेश कुमार ब्रम्हने, वरिष्ठ उप महालेखाकार (पेंशन/लेखा) लेखा व हकदारी कार्यालय

सुश्री साहिल सांगवान, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) लेखा व हकदारी कार्यालय

श्री अंकुश कुमार, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) लेखापरीक्षा कार्यालय

संपादक मंडल	
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)	**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)**
श्री गिर्राज प्रसाद मीना, सहायक निदेशक (राजभाषा)	
श्री सतीश कुमार, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	श्री विक्रम सिंह, वरिष्ठ अनुवादक
श्री मनदीप, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	श्री राहुल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
-	श्री दीपक कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

अस्वीकरण (डिसक्लेमर)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) एवं कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर की संयुक्त हिंदी पत्रिका 'चिनार ध्वनि' का मूल उद्देश्य राजभाषा का प्रचार-प्रसार करना है। 'चिनार ध्वनि' पत्रिका के छठा एवं सातवें संयुक्तांक में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के अपने निजी विचार हैं। यह आवश्यक नहीं कि 'चिनार ध्वनि' पत्रिका में संपादक मंडल की उनसे सहमति हो। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए कार्यालय और 'चिनार ध्वनि' पत्रिका का संपादक मंडल किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है। रचनाओं की मौलिकता एवं उसमें प्रयुक्त शब्दों के लिए भी रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

अनुक्रमणिका

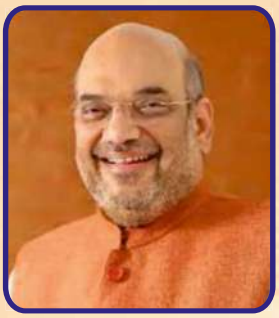
क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पृष्ठ संख्या
1.	माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	-	1
2.	कार्यालय के उच्चाधिकारियों के संदेश	-	3
3.	संपादकीय	-	11
4.	'चिनार ध्वनि' के पंचम अंक के संबंध में विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त पत्र	-	12
5.	कृषिः जीवन की आधारशिला	उदयभान सिंह, सहायक लेखा अधिकारी	13
6.	राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में एआई की भूमिका एवं संभावनाएं	विक्रम सिंह, वरिष्ठ अनुवादक	15
7.	सरकारी सेवाओं में ए.आई. संभावनाएं और चुनौतियाँ	अमित कुमार सैनी, लेखाकार	20
8.	बारिश वाली छत	वेद प्रकाश मधेशिया, लेखाकार	22
9.	वैश्वीकरण के इस युग में क्षेत्रीय भाषाओं और हिंदी का महत्व	वेद प्रकाश मधेशिया, लेखाकार	24
10.	वित्तीय पारदर्शिता और जवाबदेही; सुशासन की आधारशिला	दारा सिंह, लेखाकार	27
11.	महिला सशक्तिकरण	सुनीता सांगवान, पत्नी श्री उदयभान सिंह, सहायक लेखा अधिकारी	29
12.	भारत: एक प्राचीन सभ्यता और आधुनिक दृष्टि	पीयूष श्योराण, पुत्र श्री उदयभान सिंह, सहायक लेखा अधिकारी	33
13.	मेरी कश्मीर यात्रा	दीपक कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	38
14.	गंगबल झील (कश्मीर): ट्रैकिंग का सफर	अमन डबास, लेखापरीक्षक	43
15.	अच्छे आचरण (नैतिकता) का महत्व	इज़हार अहमद शाह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	46

16.	पासवर्ड	सतीश महानूरी, से.नि. वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	47
17.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी के भविष्य में क्रांति	निलोफर तबस्सुम वरिष्ठ लेखाकार	49
18.	कश्मीर - संस्कृति से समृद्ध	जैनब कुबरा सुपुत्री श्रीमती निलोफर तबस्सुम, वरिष्ठ लेखाकार	51
19.	वायुमंडलीय प्रदूषण	निलोफर तबस्सुम वरिष्ठ लेखाकार	53
20.	हस्त निर्मित स्केच	इशिता राठी सुपुत्री श्री पी.के. राठी, उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी)	54
21.	भाषा नहीं, पहचान हूँ मैं	पीयूष श्योराण, पुत्र श्री उदयभान सिंह, सहायक लेखा अधिकारी	55
22.	कितना कुछ सोचा था हमने तुम्हारे आने से पहले	आशीष भदानी, लेखापरीक्षक	56
23.	माँ की ममता	अंकित कुमार, सहायक लेखा अधिकारी	57
24.	फिक्र न करना पापा आपकी इज्जत नहीं घटेगी	रिंकी यादव, बहन देवव्रत, लेखाकार	59
25.	नासमझ	रिंकी यादव, बहन देवव्रत, लेखाकार	61
26.	शीर्षक: जो शब्द नहीं बने	साहिल, लेखाकार	62
27.	तुम्हें देखता रहा	पंकज कुमार, लेखापरीक्षक	64
28.	प्रेम की नई परिभाषा	कृष्ण कुमार, लेखापरीक्षक	66
29.	नारी तू अभेद्य है	दीपक कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	68
30.	समय का पहिया	मसरत हसन, वरिष्ठ लेखाकार	70
31.	उम्मीद का सूरज	प्रतीक कुमार यादव, लेखाकार	71
32.	प्यार की नजरों से	बलजीत सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	76
33.	प्रकृति की गोदी में	बलजीत सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	77
34.	कविता	उदयभान सिंह, सहायक लेखा अधिकारी	78

35.	जिला मुख्यालय, बांदीपोरा में आयोजित पेंशन अदालत	-	80
36.	जिला मुख्यालय, रियासी में पेंशन अदालत	-	82
37.	जिला मुख्यालय, अनंतनाग में आयोजित पेंशन अदालत	-	83
38.	'चिनार ध्वनि' के पंचम अंक का विमोचन	-	85
39.	सेवानिवृत अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची	-	86
40.	हिंदी पखवाड़ा-2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की झलकियाँ	-	88
41.	नराकास निबंध लेखन प्रतियोगिता	-	89
42.	हिंदी पखवाड़ा-2025 के समापन समारोह की झलकियाँ	-	92
43.	उत्तरी क्षेत्र आईएएंडएडी फुटबॉल टूर्नामेंट की महालेखाकार जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर की विजेता टीम	-	95
44.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी एवं लेखापरीक्षा) में हिंदी पखवाड़ा-2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची	-	96
45.	राजभाषा नीति		100
46.	प्रशासनिक शब्दावली		113
47.	ऑडिट दिवस-2025 के दौरान आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रमों के कुछ चित्र	-	115
48.	हस्त निर्मित स्केच	इशिता राठी सुपुत्री श्री पी.के. राठी, उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी)	अंतिम कवर पेज

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'चिनार ध्वनि' के छठे एवं सातवें संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं हिंदी अनुभाग, संपादकीय मंडल तथा सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति प्रदान करने का एक सशक्त मंच है। यह न केवल साहित्यिक अभिरुचि को प्रोत्साहित करती है, बल्कि ज्ञान, अनुभव एवं विचारों के आदान-प्रदान का भी प्रभावी माध्यम है।

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय एकता और प्रशासनिक दक्षता की आधारशिला भी है। हिंदी, भारत संघ की राजभाषा होने के नाते शासन-प्रशासन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राजभाषा का प्रभावी एवं प्रगतिशील प्रयोग न केवल संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करता है, बल्कि प्रशासन को अधिक सरल, पारदर्शी एवं जनोन्मुख बनाने में भी सहायक होता है।

मेरी शुभकामना है कि हमारी हिंदी पत्रिका भविष्य में भी निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे, हिंदी भाषा एवं साहित्य के संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान देती रहे तथा कार्यालय में राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन को नई दिशा प्रदान करती रहे।

संपादक मंडल, सभी सहयोगियों तथा रचनाकारों को उनके सराहनीय प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के आगामी अंक हेतु शुभकामनाएँ।

(जे.पी.एन. सिंह)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर



संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'चिनार ध्वनि' का छठा एवं सातवाँ संयुक्तांक प्रकाशित हो रहा है। हिंदी मात्र हमारे संविधान द्वारा प्रदत राजभाषा ही नहीं, बल्कि देश की विविध भाषायी एवं सांस्कृतिक परंपराओं को जोड़ने वाली सशक्त कड़ी भी है। कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा संवैधानिक एवं प्रशासनिक दायित्व है।

कार्यालयीन पत्रिका का उद्देश्य मात्र रचनाओं का संकलन व प्रकाशन नहीं है, वह कार्यालय के कार्य-संस्कार, उपलब्धियों, अनुभवों व सृजनात्मक चेतना का सजीव दर्पण होती है। जिस प्रकार चिनार का वृक्ष अपनी विशालता, गरिमा और गहरी जड़ों के साथ कश्मीर की पहचान का प्रतीक है, उसी प्रकार हमारी पत्रिका राजभाषा के प्रति निष्ठा, रचनात्मकता एवं कार्यालयीन संस्कृति की सशक्त अभिव्यक्ति है।

हमारी पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों, संपादक मंडल एवं राजभाषा अनुभाग के सभी कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(एस. सुनील राज)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर



संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर की संयुक्त हिन्दी गृह पत्रिका "चिनार ध्वनि" के छठे एवं सातवें संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है। सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रति रचनात्मकता के संवर्धन में विभागीय पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हिंदी गृह पत्रिकाएं सरकारी कामकाज में व्यस्त केंद्रीय कार्मिकों को अपने विचार एवं प्रतिभा को दर्शाने का एक अवसर प्रदान करती हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पित होते हुए हम सब का संवैधानिक दायित्व है कि हम अपना कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करें, जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में वृद्धि हो सके। हिंदी एक समृद्ध एवं सशक्त भाषा है। राजभाषा की उन्नति के लिए कार्यालय में राजभाषा हिंदी के सरल एवं सहज रूप का अधिकाधिक प्रयोग किया जाना चाहिए।

पत्रिका के संपादकीय मंडल, रचनाकारों एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन में भूमिका निभाने , वाले सभी कार्मिकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(सेवांग थारचिन)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर



संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर की संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका "चिनार ध्वनि" के छठे एवं सातवें संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है तथा ये विभिन्न कार्यालयों में होने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों से भी अवगत कराती हैं।

हिंदी हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक होने के साथ-साथ राजभाषा भी है, इसलिए हम दोनों भूमिकाओं के प्रति उत्तरदायी हैं। पत्रिका में समाहित लेख, कविताएं एवं अन्य रचनाएं हमारे कार्मिकों की प्रतिभा और सृजनशीलता का दर्पण हैं। हिन्दी न केवल आम आदमी की भाषा है बल्कि विज्ञान, उदयोग एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रही है। आज हर क्षेत्र में एक भाषा के रूप में हिंदी की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

पत्रिका के संपादक मंडल सहित प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों को मैं बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(मुकेश कुमार ब्रम्हने)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (पेंशन/लेखा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर



संदेश

बड़े हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'चिनार ध्वनि' के छठे एवं सातवें संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा, साहित्यिक अभिरुचि तथा हिंदी के प्रति उनके उत्साह को अभिव्यक्त करने का सशक्त मंच प्रदान करती है।

राजभाषा हिंदी केवल कार्यालयीन कार्यों के निष्पादन का माध्यम ही नहीं, बल्कि हमारे विचारों, भावनाओं और अनुभवों को सहज एवं प्रभावी ढंग से व्यक्त करने का माध्यम भी है। कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के साथ-साथ साहित्यिक एवं रचनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना भी राजभाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करता है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ पाठकों को प्रेरित करेंगी तथा हिंदी के प्रति रुचि और प्रेम को और अधिक बढ़ाएँगी। मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ।

साहिल सांगवान

(साहिल सांगवान)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर



संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत संतोष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) एवं कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर की संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका "चिनार ध्वनि" के छठे एवं सातवें संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी हमारी विरासत, विचारधारा एवं राष्ट्रीय एकता के साथ-साथ सांस्कृतिक अस्मिता का आधार है।

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताएं एवं अन्य रचनाएं हमारे कार्यालय के कार्मिकों के विचारों एवं अनुभवों का एक अद्भुत संगम है। गृह पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अनुकूल वातावरण बनता है। सरकारी और कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का बढ़ता उपयोग न केवल हमारी कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है बल्कि हमारे अंदर राष्ट्रीयता व सांस्कृतिक गौरव का भाव भी उत्पन्न करता है।

पत्रिका के संपादकीय मंडल एवं रचनाकारों के प्रयासों की सराहना करते हुए मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(अंकुश कुमार)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर



संदेश

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'चिनार ध्वनि' के छठे एवं सातवें संयुक्तांक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य है। राजभाषा हिंदी प्रशासन और जनसामान्य के बीच संवाद का सशक्त माध्यम है। कार्यालयों में हिंदी में किए जा रहे प्रशासनिक कार्यों से पारदर्शिता, सरलता एवं जनसंपर्क की प्रभावशीलता बढ़ती है।

मैं पत्रिका से जुड़े सभी सहयोगियों को उनके प्रयासों हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह अंक सभी को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रेरित करेगा।

(पी.के. राठी)
उप महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर



संदेश

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "चिनार ध्वनि" के छठे एवं सातवें संयुक्तांक को आप सभी बुद्धिजीवी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मुझे आशा है कि कार्यालय में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने में पत्रिका "चिनार ध्वनि" का सराहनीय योगदान होगा। पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ विभागीय कामकाज में भी कार्मिकों को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करती है।

कार्यालय के लेखकों का राजभाषा के प्रति समर्पण ही पाठकों की संतुष्टि के रूप में प्रकट होता है। मुझे आशा है कि रचनाएं पाठकों के लिए रुचिकर होंगी एवं वे राजभाषा के विभिन्न आयामों से परिचित हो पाएंगे क्योंकि राजभाषा हिंदी पूरे राष्ट्र को एक धागे में पिरोए हुए है।

मेरी ओर से संपादक मंडल, रचनाकारों एवं इस कार्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों को सहृदय धन्यवाद एवं शुभकामनाएं।

(जगबीर सिंह)

उप महालेखाकार (एएमजी-2)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

जम्मू एवं कश्मीर, शाखा कार्यालय जम्मू



संपादकीय

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, संवेदना और पहचान का सशक्त आधार है। हिंदी, जो जन-जन की भाषा है, हमें विचारों को सरल, प्रभावी और आत्मीय रूप में अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। इसी उद्देश्य को लेकर हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका के छठे एवं सातवें संयुक्तांक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

प्रस्तुत अंक में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचि, सृजनात्मकता और वैचारिक चेतना का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। कहानी, कविता, निबंध, संस्मरण एवं शोधात्मक लेखों के माध्यम से न केवल साहित्यिक विविधता प्रदर्शित हुई है, बल्कि समसामयिक विषयों पर गंभीर चिंतन भी सामने आया है। यह प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालयीन दायित्वों के साथ-साथ हमारे सहकर्मी साहित्य और राजभाषा हिंदी के संवर्धन में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

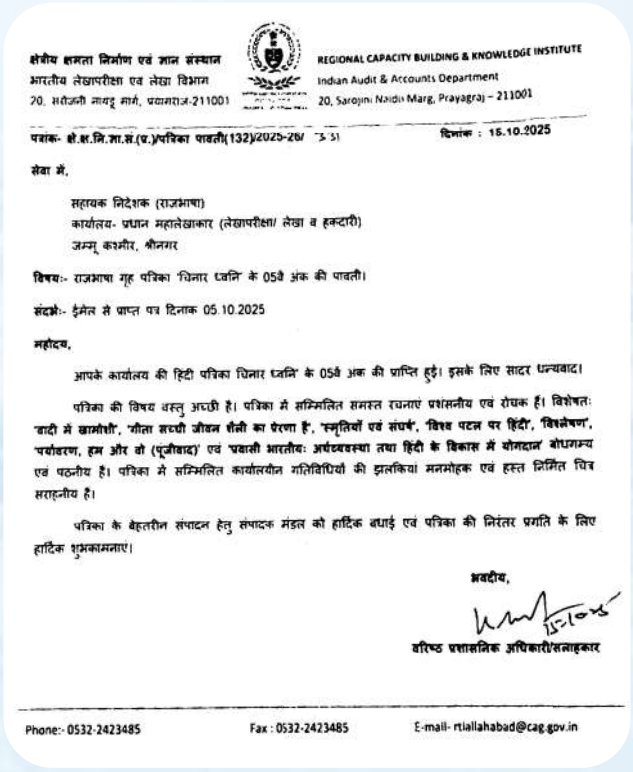
राजभाषा हिंदी का प्रयोग केवल औपचारिक दायित्व तक सीमित न रहकर, यदि वह हमारे विचार, लेखन और कार्यसंस्कृति का स्वाभाविक अंग बन जाए, तो यह अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि होगी। यह पत्रिका उसी दिशा में एक सार्थक प्रयास है, जो हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ छिपी हुई रचनात्मक प्रतिभाओं को मंच प्रदान करती है।

हम सभी रचनाकरों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिनके बहुमूल्य योगदान से यह अंक संभव हो सका। साथ ही आशा करते हैं कि भविष्य में भी आप इसी उत्साह और समर्पण के साथ हिंदी लेखन में सहभागिता करते रहेंगे। आपके सुझाव एवं रचनात्मक प्रतिक्रियाएँ हमें और बेहतर करने की प्रेरणा देंगी।

आइए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रसार और सम्मान को निरंतर सशक्त बनाएं।

गिर्राज प्रसाद मीना
सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपके पत्र .....



क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2025-26/ 351 दिनांक : 15.10.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा/ लेखा व हकदारी)
जम्मू, कश्मीर, श्रीनगर

विषय:- राजभाषा गृह पत्रिका 'चिनार ध्वनि' के 05वे अंक की पावती।

संदर्भ:- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 05.10.2025

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका चिनार ध्वनि' के 05वे अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद।

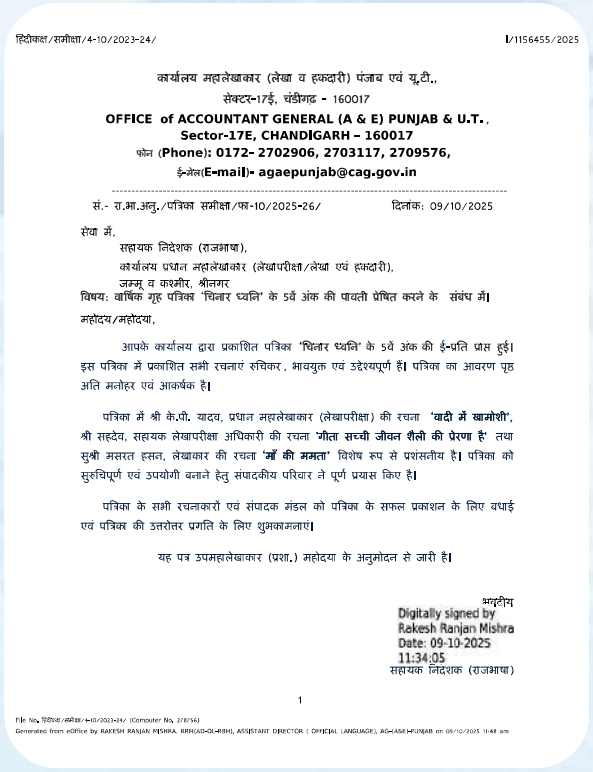
पत्रिका की विषय वस्तु अच्छी है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय एवं रोचक हैं। विशेषत: 'वादी में खामोशी', 'गीता सच्ची जीवन शैली का प्रेरणा है', 'स्मृतियों एवं संघर्ष', 'विश्व पटल पर हिंदी', 'विश्लेषण', 'पर्यावरण, हम और वो (पूंजीवाद)' एवं 'चलती भारतीय: अर्थव्यवस्था तथा हिंदी के विकास में योगदान' बोधगम्य एवं पठनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों की झलकियां मनमोहक एवं हस्त निर्मित चित्र सराहनीय हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

Phone:- 0532-2423485 Fax : 0532-2423485 E-mail- rtiallahabad@cag.gov.in



हिंदीकरण/समीक्षा/4-10/2023-24/ I/1156455/2025

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,
सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ - 160017
OFFICE of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T.,
Sector-17E, CHANDIGARH – 160017
फोन (Phone): 0172- 2702906, 2703117, 2709576,
ई-मेल(E-mail)- agaepunjab@cag.gov.in

सं.- रा.भा.अनु./पत्रिका समीक्षा/का-10/2025-26/ दिनांक: 09/10/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा/लेखा एवं हकदारी),
जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर
विषय: वार्षिक गृह पत्रिका 'चिनार ध्वनि' के 5वें अंक की पावती प्रेषित करने के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'चिनार ध्वनि' के 5वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है।

पत्रिका में श्री के.पी. यादव, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की रचना **'वादी में खामोशी'**, श्री सहदेव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना **'गीता सच्ची जीवन शैली की प्रेरणा है'** तथा सुश्री मसरत हसन, लेखाकार की रचना **'माँ की ममता'** विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं।

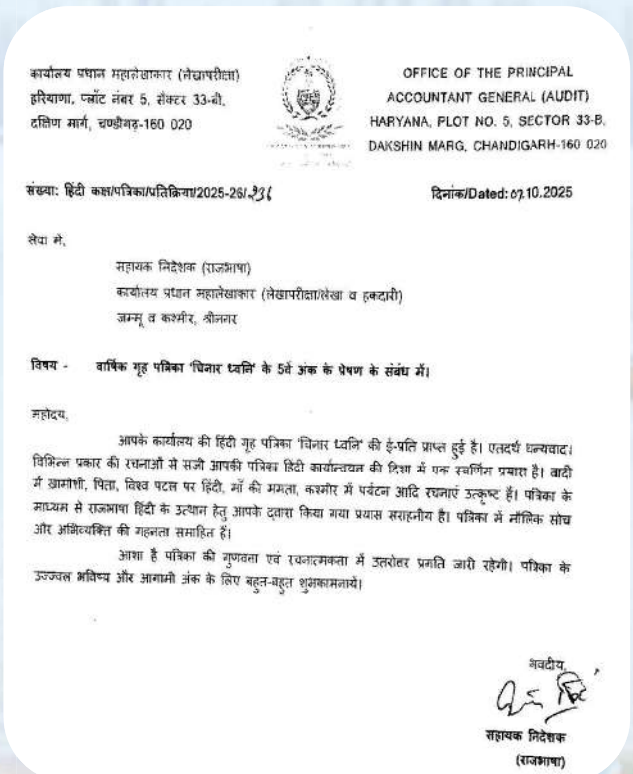
पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र उपमहालेखाकार (प्रशा.) महोदया के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय
Digitally signed by Rakesh Ranjan Mishra
Date: 09-10-2025 11:34:05
सहायक निदेशक (राजभाषा)

1

File No. हिंदीकरण/समीक्षा/4-10/2023-24/ (Computer No. 278154)
Generated from eOffice by RAKESH RANJAN MISHRA, RMHAQD-DL-RBHI, ASSISTANT DIRECTOR (OFFICIAL LANGUAGE), AG-CASE-I-PUNJAB on 09/10/2025 11:48 am



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, प्लॉट नंबर 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/पतिक्रिया/2025-26/331 दिनांक/Dated: 07.10.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा/लेखा व हकदारी)
जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर

विषय - वार्षिक गृह पत्रिका 'चिनार ध्वनि' के 5वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

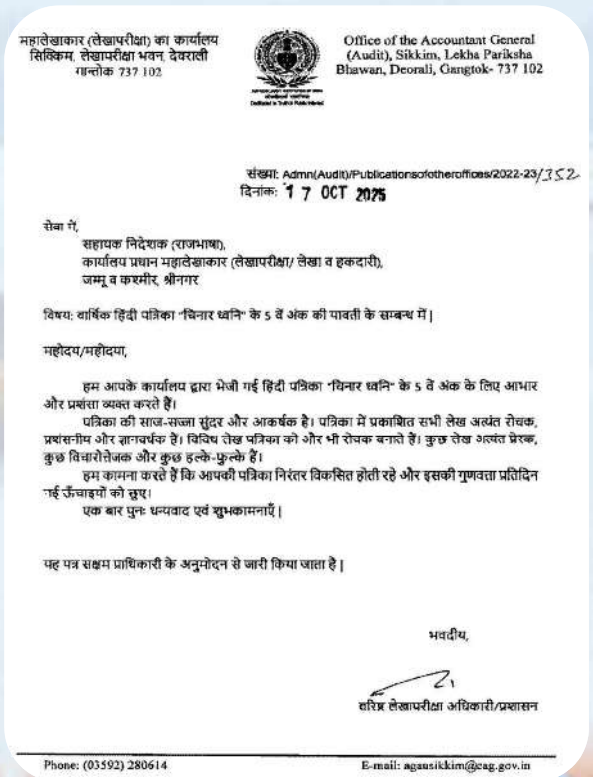
महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'चिनार ध्वनि' की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। वादी में खामोशी, पिता, विश्व पटल पर हिंदी, माँ की ममता, कश्मीर में पर्यटन आदि रचनाएं उत्कृष्ट हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

भवदीय,

सहायक निदेशक
(राजभाषा)



महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय
सिक्किम, लेखापरीक्षा भवन, देवराली
गान्तोक 737 102

Office of the Accountant General
(Audit), Sikkim, Lekha Pariksha
Bhawan, Deorali, Gangtok- 737 102

संख्या: Admn(Audit)/Publicationsofotheroffices/2022-23/352
दिनांक: 17 OCT 2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा/ लेखा व हकदारी),
जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर

विषय: वार्षिक हिंदी पत्रिका "चिनार ध्वनि" के 5 वें अंक की पावती के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदया,

हम आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिंदी पत्रिका "चिनार ध्वनि" के 5 वें अंक के लिए आभार और प्रशंसा व्यक्त करते हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा सुंदर और आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख अत्यंत रोचक, प्रशंसनीय और ज्ञानवर्धक है। विविध लेख पत्रिका को और भी रोचक बनाते हैं। कुछ लेख अत्यंत प्रेरक, कुछ विचारोत्तेजक और कुछ हल्के-फुल्के हैं।

हम कामना करते हैं कि आपकी पत्रिका निरंतर विकसित होती रहे और इसकी गुणवत्ता प्रतिदिन नई ऊँचाइयों को छुए।

एक बार पुनः धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ।

यह पत्र सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

Phone: (03592) 280614 E-mail: agausikkim@cag.gov.in

कृषिः जीवन की आधारशिला



उदयभान सिंह
सहायक लेखा अधिकारी

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ अधिकांश जनसंख्या खेती पर निर्भर करती है। कृषि न केवल भोजन का स्रोत है, बल्कि यह देश की अर्थव्यवस्था का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। गेहूँ, चावल, गन्ना, कपास और दालें जैसी प्रमुख फसलें भारत में उगाई जाती हैं।

कृषि का महत्व केवल खाद्य उत्पादन तक सीमित नहीं है बल्कि यह रोजगार, व्यापार और ग्रामीण विकास का भी आधार है। किसान दिन-रात मेहनत करके देशवासियों के लिए अन्न पैदा करते हैं। उनकी मेहनत ही देश की आत्मनिर्भरता की पहचान है।

आज के समय में कृषि क्षेत्र में कई बदलाव आए हैं। आधुनिक तकनीकों जैसे ट्रैक्टर, सिंचाई प्रणाली, उन्नत बीज और जैविक खेती ने उत्पादन बढ़ाया है। सरकार भी किसानों को सहायता देने के लिए कई योजनाएं चला रही है, जैसे प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना आदि।

हालाँकि, कृषि क्षेत्र को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है- जैसे जलवायु परिवर्तन, भूमि की कमी, सिंचाई की समस्याएं और बाजार में उचित मूल्य न मिलना। इन समस्याओं का समाधान करना आवश्यक है ताकि किसान आत्मनिर्भर बन सकें और कृषि क्षेत्र मजबूत हो।

कृषि केवल एक व्यवसाय नहीं है बल्कि संस्कृति और परंपरा का एक हिस्सा है। यदि कृषि को सशक्त बनाएं, तो देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। किसानों का सम्मान और उनकी सहायता करना हमारा नैतिक कर्तव्य है।

भारत में 60 से 70% आबादी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। भारतीय जलवायु और विविध भूमि संरचना, विभिन्न प्रकार की फसलों के उत्पादन के लिए अनुकूल है।

कृषि पशुपालन, वानिकी, मत्स्य पालन जैसे क्षेत्रों को भी प्रभावित करती है। इसके अलावा बागवानी और जैविक खेती का भी चलन बढ़ रहा है। किसान देश की आत्मा है। उनकी मेहनत और समर्पण के बिना देश की प्रगति अधूरी है। कृषि क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता है। किसानों को शिक्षा, प्रशिक्षण और बाजार तक सीधी पहुँच मिलनी चाहिए। उनको लाभकारी समर्थन मूल्य, भंडारण सुविधा व निर्यात को बढ़ावा मिलना चाहिए। एक सशक्त कृषि व्यवस्था ही आत्मनिर्भर भारत की नींव रखकर देश की प्रगति और विकास में अतुलनीय योगदान दे सकती है।



राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एआई की भूमिका एवं संभावनाएं



विक्रम सिंह
वरिष्ठ अनुवादक

आज के डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-एआई) भाषा के विकास, संरक्षण और प्रसार का एक शक्तिशाली माध्यम बन चुकी है। भारत जैसे बहुभाषी देश में राजभाषा हिंदी को प्रशासन, शिक्षा, तकनीक और वैश्विक मंच पर स्थापित करने में एआई महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

1. अनुवाद तकनीक के माध्यम से हिंदी का विस्तार:

एआई आधारित मशीन अनुवाद ने भाषाई बाधाओं को काफी हद तक कम किया है।

- सरकारी दस्तावेज, न्यायिक सामग्री, तकनीकी साहित्य एवं शैक्षिक सामग्री आदि का अंग्रेजी से हिंदी में तेज और सटीक अनुवाद संभव हुआ है।
- इससे राजभाषा नीति के क्रियान्वयन में गति आई है।
- बहुभाषी भारत में हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में सशक्त बनाने में मदद मिलती है।

2. वॉइस टेक्नोलॉजी से जन-जन तक हिंदी:

एआई आधारित स्पीच रिक्गनिशन और टेक्स्ट-टू-स्पीच तकनीकों ने हिंदी को डिजिटल रूप से अधिक सुलभ बनाया है।

- हिंदी में बोलकर कार्य करने वाले वर्चुअल असिस्टेंट, चैटबॉट और मोबाइल एप विकसित हो रहे हैं।

- ग्रामीण एवं कम साक्षर वर्ग भी तकनीक से हिंदी के माध्यम से जुड़ पा रहा है।
- ई-गवर्नेंस सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध कराना आसान हुआ है।

3. शिक्षा एवं अनुसंधान में हिंदी का सशक्तिकरण:

   एआई आधारित शैक्षिक प्लेटफॉर्म:

   - हिंदी माध्यम के छात्रों के लिए स्मार्ट लर्निंग कंटेंट, ऑटोमेटेड नोट्स, क्विज़ और व्याख्याएँ उपलब्ध करा रहे हैं।
   - विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा और प्रबंधन जैसे विषयों का हिंदी में अध्ययन संभव हो रहा है।
   - इससे हिंदी ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में विकसित हो रही है।
   - कठिन विषयों को सरल हिंदी में समझाया जा सकता है।
   - ऑनलाइन शिक्षा में भाषा-समावेशन संभव हुआ है।

4. डिजिटल कंटेंट निर्माण में एआई की भूमिका:

   एआई टूल्स के माध्यम से–

   - हिंदी में लेख, ब्लॉग, समाचार, स्क्रिप्ट और शैक्षिक सामग्री का तेज़ निर्माण।
   - सोशल मीडिया पर हिंदी सामग्री की मात्रा और गुणवत्ता दोनों बढ़ी हैं।
   - हिंदी की वैश्विक डिजिटल उपस्थिति मजबूत हुई है।
   - नए रचनाकारों को भाषा प्रयोग में सुविधा मिल रही है।

5. प्रशासनिक एवं कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का उपयोग:

   एआई आधारित दस्तावेज प्रबंधन और अनुवाद प्रणाली से:

   - सरकारी कार्यालयों में हिंदी में फाइलिंग, नोटिंग-ड्राफ्टिंग आसान हुई है।
   - राजभाषा अनुपालन की निगरानी स्वचालित रूप से संभव हो पा रही है।
   - हिंदी को कार्यभाषा बनाने की दिशा में व्यवहारिक समाधान मिल रहे हैं।
   - सरकारी कार्यों में द्विभाषिकता लागू करना सरल हुआ है।
   - राजभाषा नीति के क्रियान्वयन को तकनीकी समर्थन मिल रहा है।

6. हिंदी का वैश्विक प्रसार:

   एआई ने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने में मदद की-

   - विदेशी विद्यार्थी हिंदी सीखने के लिए डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं।
   - हिंदी सामग्री का वैश्विक प्रसार तेज़ हुआ है।
   - हिंदी अब केवल बोलचाल की नहीं, डिजिटल संचार की भी भाषा बन रही है।
   - "डिजिटल हिंदी इकोसिस्टम" का निर्माण हुआ है, जैसे- हिंदी सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन, हिंदी डेटा बैंक और कॉर्पस निर्माण, भारतीय ज्ञान परंपरा का डिजिटलीकरण आदि।

7. स्टार्ट-अप और नवाचार के अवसर: हिंदी आधारित एआई एप, लोकल भाषा टेक्नोलॉजी, एग्री-टेक, हेल्थ-टेक जैसे क्षेत्रों में नए रोजगार और स्टार्ट-अप उभर रहे हैं।

8. भारत सरकार ने डिजिटल प्रशासन और भाषाई समावेशन को ध्यान में रखते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित अनेक पहलें शुरू की हैं। इन पहलों का उद्देश्य हिंदी सहित भारतीय भाषाओं को शासन, शिक्षा, तकनीक और नागरिक सेवाओं में सशक्त बनाना है।

एआई आधारित राष्ट्रीय भाषा मंच - "भाषिणी" का उपयोग:

भारत सरकार ने डिजिटल इंडिया भाषिणी (नेशनल लेंग्वेज ट्रांसलेशन मिशन) को भारतीय भाषाओं में डिजिटल सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए विकसित किया।

यह प्लेटफ़ॉर्म 35 से अधिक भाषाओं में कार्य करता है और 1600+ एआई मॉडल तथा 18 भाषा सेवाओं के माध्यम से अनुवाद, वॉइस और टेक्स्ट सुविधाएँ प्रदान करता है।

इसका उद्देश्य डिजिटल सेवाओं तक नागरिकों की पहुँच उनकी मातृभाषा में सुनिश्चित करना है, जिससे भाषा-आधारित बाधाएँ समाप्त हों।

इस मिशन के तहत विज्ञान, तकनीक और शैक्षिक सामग्री को अंग्रेजी के साथ भारतीय भाषाओं (जैसे हिंदी) में उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है। इससे राजभाषा हिंदी को प्रशासनिक एवं तकनीकी कार्यों में व्यवहारिक रूप से लागू करने का आधार तैयार हुआ है।

9. भारत सरकार का राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को सरल और प्रभावी बनाने के लिए आधुनिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग तकनीकों का तेजी से विस्तार कर रहा है।

यहाँ विभाग द्वारा संचालित प्रमुख एआई पहलें दी गई हैं:

क. अनुवाद और प्रबंधन उपकरण:

कंठस्थ 2.0: यह एक स्मृति आधारित अनुवाद टूल है जो न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन तकनीक का उपयोग करता है। यह सरकारी फाइलों के अनुवाद में समय और मानव श्रम की बचत करता है।

भारती: यह विभाग का आधिकारिक दस्तावेज अनुवाद और प्रबंधन पोर्टल है। इसमें वेटर सिस्टम शामिल है, जहाँ एआई द्वारा किए गए अनुवाद की मानवीय जांच की जाती है, जिससे इसकी सटीकता लगातार सुधरती है।

मन्त्र-राजभाषा: प्रशासनिक और तकनीकी क्षेत्रों के दस्तावेजों का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करने के लिए यह एक मशीन सहायक अनुवाद प्रणाली है।

ख. भाषा शिक्षण और ई-लर्निंग:

लीला-राजभाषा: इसका पूरा नाम "लर्न इंडियन लेंग्वेजिज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस" है। यह एक मल्टीमीडिया आधारित इंटेलिजेंट सेल्फ लर्निंग टूल है, जो गैर-हिंदी भाषियों को उनकी मातृभाषा (जैसे तमिल, तेलुगु, मराठी) के माध्यम से हिंदी सीखने में मदद करता है।

10. ग्रामीण एवं स्थानीय शासन में हिंदी और भारतीय भाषाओं का एआई प्रयोग:

एआई आधारित भाषाई उपकरणों का उपयोग पंचायत स्तर तक संचार को सरल बनाने में किया जा रहा है। एआई -संचालित भाषा तकनीक से पंचायत कार्य, योजना और निगरानी स्थानीय भाषाओं में संभव हुई है, जिससे सहभागिता और सेवा-प्रदाय बेहतर हुआ।

भाषिणी के “वॉइस-टू-वॉइस” अनुवाद उपकरण का उपयोग सरकारी सम्मेलनों और कार्यक्रमों में किया जा रहा है, जिससे विभिन्न भाषाओं के बीच संवाद आसान हुआ। यह हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में व्यवहारिक स्तर पर सशक्त बनाता है।

11. इंडिया एआई मिशन के अंतर्गत भारतीय भाषाओं के लिए स्वदेशी एआई मॉडल:

भारत सरकार ने 2024 में इंडिया एआई मिशन को स्वीकृति दी, जिसका उद्देश्य स्वदेशी एआई क्षमता विकसित करना और भारतीय भाषाओं के लिए तकनीकी समाधान तैयार करना है। सरकार भारतीय आवश्यकताओं के अनुरूप लार्ज लेंगवेज मॉडल्स और भाषा-आधारित एआई प्रणालियों के विकास को बढ़ावा दे रही है।

12. एआई फॉर भारत और भाषाई डेटा अवसंरचना का निर्माण:

भारतीय भाषाओं के लिए भाषाई डेटासेट, स्पीच रिकग्निशन, मशीन अनुवाद और टेक्स्ट-टू-स्पीच तकनीक विकसित की जा रही है, जो 22 अनुसूचित भाषाओं को डिजिटल रूप से सक्षम बनाती हैं। इन मॉडलों का उपयोग शासन, शिक्षा, न्यायपालिका और कृषि सेवाओं में किया जा रहा है। यह हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के लिए दीर्घकालिक तकनीकी आधार तैयार करता है।

13. प्रशासनिक एवं राजभाषा संसाधनों का डिजिटलीकरण:

राजभाषा विभाग द्वारा शब्दकोश, अनुवाद संसाधन और भाषाई परियोजनाओं (जैसे हिंदी शब्दकोश निर्माण) पर कार्य किया जा रहा है, जो डिजिटल हिंदी संसाधनों को मजबूत करते हैं।

यह एआई प्रशिक्षण हेतु हिंदी डेटा और शब्द संपदा उपलब्ध कराता है।

चुनौतियां:

एआई के उपयोग के बावजूद कुछ समस्याएँ बनी हुई हैं, जैसे- हिंदी के मानकीकृत तकनीकी शब्दावली का अभाव, क्षेत्रीय बोलियों और शुद्ध भाषा के बीच संतुलन, उच्च गुणवत्ता वाले हिंदी डेटा की कमी, तकनीकी विकास में अंग्रेजी का प्रभुत्व आदि।

इन चुनौतियों को नीति, अनुसंधान और भाषाई संसाधन निर्माण से दूर किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता राजभाषा हिंदी के लिए केवल तकनीकी साधन नहीं, बल्कि भाषाई सशक्तिकरण का माध्यम है। एआई के माध्यम से हिंदी प्रशासन की भाषा, ज्ञान-विज्ञान की भाषा, डिजिटल दुनिया की भाषा और वैश्विक संवाद की भाषा बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर है। एआई हिंदी प्रचार का आधुनिक और प्रभावशाली साधन बन चुका है।

यदि भाषा-संसाधनों का विकास, तकनीकी निवेश और नीति-समर्थन निरंतर जारी रहे, तो एआई हिंदी को भविष्य की प्रमुख विश्व भाषाओं में स्थापित कर सकता है। इस प्रकार, एआई राजभाषा हिंदी को "कार्यालय की भाषा" से आगे बढ़ाकर "डिजिटल भारत की कार्यशील भाषा" बनाने की दिशा में निर्णायक भूमिका निभा रहा है।



सरकारी सेवाओं में ए.आई. संभावनाएं और चुनौतियाँ



अमित कुमार सैनी
लेखाकार

आज के डिजिटल युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (A.I.) सरकारी कार्यप्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहा है। भारत सरकार, प्रशासन को अधिक पारदर्शी, कुशल और नागरिक-केंद्रित बनाने के लिए ए.आई. का व्यापक उपयोग कर रही है।

"डिजिटल इंडिया", "मिशन कर्मयोगी", और "नेशनल प्रोग्राम ऑन ए.आई". जैसे कार्यक्रम इस परिवर्तन को मजबूत आधार प्रदान करते हैं। Stanford A.I. के अनुसार, भारत विश्व के शीर्ष 10 ए.आई- उपयोगकर्ताओं में शामिल है एवं तीसरा सबसे बड़ा ए.आई. टैलेंट पूल का स्वामित्व करता है। सरकारी सेवाओं में ए.आई का प्रभाव अनेक क्षेत्रों में देखा जा सकता है। विभिन्न मंत्रालयों में ए.आई. आधारित चैटबॉट नागरिको को 24x7 सेवाएं और जानकारी प्रदान कर रहे हैं। UIDAI प्रतिदिन 8-10 करोड़ डिजिटल ऑथेंटिकेशन ए.आई आधारित एल्गो से सुरक्षित रूप से प्रोसेस करता है। स्मार्ट सिटी मिशन के तहत 100 नगर निगमों में ए.आई आधारित ट्रैफिक प्रबंधन, सीसीटीवी निगरानी और आपातकालीन प्रतिक्रिया सिस्टम लागू किए जा चुके हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में ई-संजीवनी से ए.आई. सक्षम टेली-कंसल्टेशन के 17 करोड़ से अधिक मामले दर्ज किए हैं। कृषि मंत्रालय का "कृषि मेघ" प्लेटफॉर्म किसानों को मौसम और फसल संबंधी ए.आई. आधारित डेटा उपलब्ध है।

इस प्रगतियों के बावजूद, सरकारी क्षेत्र में ए.आई. अपनाने की अनेक तकनीकी समस्याएं भी हैं। सबसे बड़ी चुनौती है डेटा सुरक्षा और गोपनीयता। ए.आई. डेटा लीक या दुरूपयोग होने पर गंभीर जोखिम उत्पन्न हो सकती है। इसके अलावा, दूर-दराज के कई इलाकों में आधुनिक इंफ्रा, तेज इंटरनेट जैसी सुविधाओं का अभाव है।

ए.आई. आधारित सिस्टमों को समझने, चलाने और मॉनिटर करने के लिए नए कौशल आवश्यक हैं। साइबर सुरक्षा खतरों और उच्च लागत भी ए.आई के प्रभावी उपयोग पर प्रश्न-चिन्ह लगाते हैं। ए.आई. संवेदनशीलता, नैतिक निर्णय क्षमता तथा विवेकपूर्ण आदि समस्याओं के हल में असमर्थ है।

अतः सरकारी सेवाओं में ए.आई. का उपयोग जितना परिवर्तनकारी है, उतना ही जिम्मेदारीपूर्ण और संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता भी है। पारदर्शिता, डेटा संरक्षण, तकनीकी ढ़ाँचा, साइबर सुरक्षा और कर्मचारियों के सतत प्रशिक्षण के माध्यम से ए.आई. प्रशासन को अधिक सक्षम, पारदर्शी और नागरिक-केंद्रित बना सकता है।



बारिश वाली छत



वेद प्रकाश मधेशिया
लेखाकार

हम सब अपनी पढ़ाई, कैरियर और भविष्य की दौड़ में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि पीछे छूटती चीजों पर ध्यान ही नही दे पाते। यह कहानी ऐसे ही एक युवक राघव की है, जिसने बहुत देर बाद यह समझा कि जीवन केवल सफल होने का नाम नही, बल्कि संबंधों को संजोने का भी नाम है।

राघव एक बड़ी कंपनी में कार्यरत था। दिनभर रिपोर्टें, मीटिंगें और डेडलाइन – यही उसकी दिनचर्या थी। चमकते शहर में रहते हुए भी उसका जीवन नीरस हो रहा था। वह अपनी बालकनी में खड़ा होकर नीचे बहती लोगों, वाहनों और रोशनी की भीड़ को देखता, पर भीतर ही भीतर कहीं खालीपन महसूस करता।

उसके परिवार में उसके माता-पिता और छोटी बहन थी, जो गाँव में रहते थे। माँ अक्सर फोन पर कहती:

“कब आएगा बेटा? बरसात आने वाली है। याद है न वो छत?”

राघव हर बार वही उत्तर देता: “माँ, समय नहीं मिल पा रहा। बहुत काम है।”

जुलाई की एक रात शहर में तेज बारिश हुई। छतों, सड़कों और पेड़ों पर बारिश की ध्वनि गूँज रही थी। उसी क्षण राघव को पिताजी का फोन आया। पिताजी ने कहा, “यहाँ भी बारिश हो रही है। तेरी माँ उस पुरानी छत पर गई थी।” राघव चुप रह गया।

उसे वह छत याद थी, जहाँ चारों बारिश में भीगते थे, माँ पकोड़े बनाती थी, बहन हँसती थी, और पिताजी चाय लाते थे। वह छत आज भी वैसी ही थी, पर उस छत की खुशियाँ अब अधूरी थीं।

अगले दिन राघव कुछ दिनों की छुट्टी लेकर घर चला गया।

बस की खिड़की से दूर तक फैले खेत, तालाब, कच्चे रास्ते और बादलों से घिरा आसमान दिखाई दे रहा था। शहर की भागदौड़ पीछे छूट रही थी और बचपन की यादें धीरे-धीरे लौट रही थी।

गाँव पहुँचे तो बहन दौड़कर गले लग गई। माँ के चेहरे पर चमक आ गई।
पिताजी ने धीरे से कहा, "अब सब पूरा लग रहा है।" शाम को फिर बादल आए।
बहन ने उत्साह से कहा, "छत पर चलो! बारिश आएगी!"
माँ ने पकोड़े बनाए, पिताजी ने चाय। पहली बूँद गिरी और चारों पुरानी छत पर जा पहुँचे।
बारिश की ठंडी हवा, टीन पर गिरती बूँदों की आवाज, मिट्टी की महक – सब कुछ अपरिहार्य सुहावना था।
बहन हँस-नाच रही थी। राघव भी मुस्कुरा रहा था – शायद महीनों के बाद।
रात को चारों छत पर बैठे थे और आकाश में तारे चमक रहे थे।
माँ ने धीमे स्वर में कहा–
"हमें बहुत कुछ नहीं चाहिए बेटा।
जब तू हमारे साथ बैठ जाता है, तो हम अमीर हो जाते हैं।"
यह सुन राघव की आँखें भर आईं।
कुछ दिनों बाद वह शहर लौट आया - वही रास्ते, वही ट्रैफिक, वही काम। लेकिन अब उसका मन बदल चुका था।
पहले ही दिन उसने अपने डेस्क पर अपने परिवार की छत पर खींची हुई तस्वीर रखी और अपने कैलेंडर में एक नई योजना लिखी: "हर महीने – परिवार के साथ समय"।
अब उसके लिए सिर्फ काम ही प्राथमिकता नहीं थी। वह समझ चुका था कि – परिवार वह जगह है जहाँ थके हुए कदमों को सुकून मिलता है।

**** संदेश ****

"जीवन दौड़ का नाम नहीं, संबंधों को समय देने का नाम है। परिवार ही हमारी असली छत है, जो हर तूफान, हर बारिश में हमें सुरक्षित रखती है।"



वैश्वीकरण के इस युग में क्षेत्रीय भाषाओं और हिंदी का महत्व

वेद प्रकाश मधेशिया
लेखाकार

"हर भारतीय भाषा में भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब दिखाई देता है और वे पूजा के योग्य हैं।" - प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

1991 में आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत के साथ ही भारतीय समाज में परिवर्तन की गति कई गुना बढ़ गई है। यह स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था समाज के परिवर्तन की प्रमुख शक्ति है। इसलिए आधुनिक पूंजीवादी आर्थिक मॉडल का प्रभाव उन भारतीय समुदायों पर पड़ा है जो पारंपरिक, आत्मनिर्भर आर्थिक ढाँचों पर आधारित थे। आज के आपस में जुड़े और परस्पर निर्भर विश्व में, जहाँ एक स्थानीय नागरिक वैश्विक नागरिक बन रहा है, वहाँ वैश्विक मानकों को समझना और स्वयं को वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में स्थापित करना समय की मांग बन गया है।

विश्व एक वैश्विक गाँव बन चुका है, जहाँ मानव जीवन के हर पहलू को वैश्विक कारकों ने प्रभावित किया है। अतः विश्व से संवाद स्थापित करने के लिए उन भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है जो वैश्विक स्तर पर बोली जाती हैं। अंग्रेजी ऐसी ही एक भाषा है, और भारत ब्रिटिश उपनिवेश होने के कारण यह देश में शिक्षित वर्ग की प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है।

भारत आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण चरण में है। हमें तेजी से प्रगति करनी होगी। भारत विश्व से अलग होकर प्रगति नहीं कर सकता। हमें विश्व के संसाधनों और आधुनिक तकनीक की आवश्यकता है। अधिकांश आधुनिक तकनीकी ज्ञान अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है। इसलिए अंग्रेजी सीखना आवश्यक है ताकि हम वैश्विक अवसरों का लाभ उठा सकें और वैश्विक व्यापार कर सकें। वैश्वीकरण समय की अनिवार्य आवश्यकता है।

भाषा एक संस्कृति की पहचान है।

ब्रिटिश शासन के आगमन ने अंग्रेजी को भारत में संचार की भाषा बना दिया। मैकॉले के अनुसार, अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य ऐसे भारतीयों का निर्माण करना था जो *"खून और रंग से भारतीय हों, पर स्वाद, विचार, नैतिकता और बौद्धिकता से अंग्रेज हों।"* यहीं से पहचान का संकट उत्पन्न हुआ। भाषा मात्र संवाद का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति की आत्मा होती है। अंग्रेजी या कोई भी विदेशी भाषा भारतीय संस्कृति से पूर्णतः संगत नहीं है।

भारतीय नागरिकों में आत्म-पहचान की भावना विकसित करने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं पर बल देना आवश्यक है। इन्हीं भाषाओं से व्यक्ति संस्कृति, धर्म, नैतिकता और जीवन-मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करता है। संस्कृति से जुड़ा गौरव व्यक्ति के आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उसे अपनी जड़ों से जोड़कर रखता है।

इसलिए मानव के मनोवैज्ञानिक विकास के लिए उसकी मातृभाषा का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। यदि भारत को विश्वशक्ति बनना है, तो क्षेत्रीय भाषाओं के विकास और प्रसार पर विशेष ध्यान देना होगा।

लंबे विदेशी शासन और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों ने भारतीयों में हीन भावना भर दी है। आज भी भारतीय मन का उपनिवेश-परित्याग पूर्ण रूप से नहीं हुआ है।

इस मानसिक दासता से मुक्ति के लिए मातृभाषा और संस्कृति में सम्मान की भावना जगानी होगी। हमारे पास विशाल सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विरासत है, जिसे आत्मगौरव से अपनाने की आवश्यकता है।

साथ ही यह भी सत्य है कि वैश्विक प्रवासन और डिजिटल युग में अंग्रेजी भाषा हमें अतिरिक्त लाभ देती है। अतः अंग्रेजी का ज्ञान भी अनिवार्य है।

"एक अलग भाषा जीवन की एक अलग दृष्टि है।" - फेडेरिको फेल्लिनी

भाषा सीखना संस्कृति सीखना है। बहुभाषाविद व्यक्ति अधिक सहिष्णु, संवेदनशील और मानसिक रूप से विकसित होता है। भारत में बहुभाषिकता हमारी सामाजिक सहिष्णुता का आधार रही है। इसलिए देश में यह आवश्यक है कि नागरिक अपनी क्षेत्रीय भाषा के साथ-साथ एक वैश्विक भाषा भी सीखें।

शोध बताते हैं कि बच्चा अपनी मातृभाषा में सीखकर अधिक बौद्धिक विकास करता है। प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होने से बच्चों पर अनावश्यक बोझ नहीं पड़ता।

भारत विविधताओं का देश है—भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, भाषायी—और इन्हीं विविधताओं से राष्ट्र की सुंदरता प्रकट होती है। इस सुंदरता को बनाए रखने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण अनिवार्य है।

युनेस्को ने भारत की 191 भाषाओं को संकटग्रस्त या लुप्तप्राय बताया है। भाषा का लोप संस्कृति, इतिहास और पहचान का लोप है। अतः सरकार और समाज दोनों की जिम्मेदारी है कि इन भाषाओं को बढ़ावा दें।

"हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।" - कमलापति त्रिपाठी

भारत की विविधताओं और संस्कृति के समन्वय से हिंदी का विकास हुआ है। हिंदी की शब्दावली में अनेक भारतीय भाषाओं का योगदान है। हिंदी भारतीय सभ्यता की मिश्रित पहचान का प्रतीक है। यह देशभर में व्यापक रूप से बोली और समझी जाती है तथा राष्ट्रीय चेतना को व्यक्त करने का सामर्थ्य रखती है।

वैश्वीकरण के इस समय में भारत को विश्व में अपनी राष्ट्रीय पहचान को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करना है। भारत ज्ञान का केंद्र रहा है और आधुनिक विश्व में भी बहुत कुछ देने की क्षमता रखता है।

भारत पुनः विश्वगुरु बनने की क्षमता रखता है और हिंदी उस पहचान को दुनिया तक पहुँचाने का माध्यम बन सकती है।

वैश्वीकरण के प्रभाव से समाज का एक हिस्सा अपनी पहचान और भाषा से दूर जा रहा है। इसलिए आत्म-सम्मान और सांस्कृतिक आत्मविश्वास के लिए अपनी भाषाओं को प्राथमिकता देना पहले से अधिक जरूरी हो गया है।

सशक्त व्यक्ति ही सशक्त राष्ट्र निर्माण करता है। राष्ट्र की मजबूत पहचान उसकी भाषा पर आधारित होती है।

"मुझे बताओ कि एक राष्ट्र अपनी भाषा को कितना जानता और सम्मान देता है, मैं तुम्हें बता दूँगा कि वह राष्ट्र अपनी पहचान की कितनी रक्षा करता है।"

वित्तीय पारदर्शिता और जवाबदेही; सुशासन की आधारशिला



दारा सिंह
लेखाकार

सरकारी तंत्र में वित्तीय पारदर्शिता और जवाबदेही सुशासन की सबसे महत्वपूर्ण कसौटी मानी जाती है। सुशासन की अवधारणा तब ही सार्थक होती है जब सार्वजनिक धन के उपयोग की प्रत्येक प्रक्रिया स्पष्ट, अनुशासित और जनता के प्रति उत्तरदायी हो। भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग की भूमिका इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल वित्तीय निरीक्षण का दायित्व निभाता है, बल्कि सरकारी कार्य प्रणाली में पारदर्शिता, निष्पक्षता और जवाबदेही के उच्च मानक स्थापित करता है। यह विभाग अपने सटीक ऑडिट निष्कर्षों, रिपोर्टिंग के वैज्ञानिक तरीकों और प्रशासनिक तंत्र की कमजोरियों को उजागर करने की क्षमता के कारण सुशासन के स्तंभों में से एक माना जाता है।

वित्तीय पारदर्शिता का मूल उद्देश्य सार्वजनिक संसाधनों के उपयोग को पूर्ण स्पष्टता के साथ समाज के सामने रखना है। जब बजट निर्माण, व्यय प्रबंधन, राजस्व-संग्रह और योजनाओं पर होने वाले खर्च की सूचनाएं एक सुव्यवस्थित और सुलभ रूप में उपलब्ध होती हैं, तब नागरिक सरकार के निर्णयों का मूल्यांकन बेहतर ढंग से कर पाते हैं। सूचना का यह खुलापन प्रशासन में न केवल विश्वास बढ़ाता है, बल्कि भ्रष्टाचार, संसाधनों की बर्बादी और अनियमितताओं को भी सीमित करता है। पिछले वर्षों में डिजिटल गवर्नेंस तथा ई-पेमेंट प्रणालियों ने पारदर्शिता बढ़ाने की दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया है। ऑनलाइन बजट पोर्टल, सार्वजनिक डेटा डैशबोर्ड और रीयल-टाइम मॉनिटरिंग प्रणालियाँ यह सुनिश्चित कर रही हैं कि वित्तीय सूचनाएं सही समय पर सही रूप में उपलब्ध हों। आईए एण्ड एडी में डिजिटल टूल्स, डेटा एनालिटिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी आधारित निरीक्षण प्रणालियों का बढ़ता उपयोग इस परिवर्तन को और गति देता है।

जवाबदेही पारदर्शिता का प्राकृतिक विस्तार है। इसका अर्थ है कि वित्तीय निर्णयों और प्रक्रियाओं के प्रत्येक चरण की समीक्षा संभव हो तथा जिम्मेदार अधिकारी अपने कार्यों के प्रति उत्तरदायी हों। जवाबदेही किसी दंडात्मक प्रक्रिया तक सीमित नहीं, बल्कि यह एक ऐसी प्रशासनिक

संस्कृति का निर्माण करती है जो नैतिकता, दक्षता और उत्तरदायित्व पर आधारित हो। उच्च स्तर की जवाबदेही सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता बढ़ाती है, क्योंकि इसका प्रत्यक्ष संबंध सही मूल्यांकन, सही क्रियान्वयन और बेहतर परिणामों से है। इसी संदर्भ में कैग द्वारा प्रस्तुत ऑडिट रिपोर्टें सरकार की नीतिगत सुधारों की दिशा में मार्गदर्शन देती हैं। जिससे प्रशासनिक निर्णय अधिक तर्कसंगत और जनहितकारी बनते हैं।

सुशासन का वास्तविक उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग तक न्यायसंगत, विश्वसनीय और कुशल सेवाएँ पहुँचाना है। यह तभी संभव है जब वित्तीय संसाधनों का उपयोग पारदर्शी और उत्तरदायी तरीके से किया जाए। एक पारदर्शी वित्तीय प्रणाली न केवल निवेशकों एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का विश्वास बढ़ाती हैं, बल्कि स्थायी और समावेशी विकास के लिए आवश्यक आर्थिक आधार भी तैयार करती हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण और बड़े लोकतंत्र में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि सार्वजनिक धन के उपयोग की पूर्ण शुचिता सुनिश्चित हो।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग की जिम्मेदारी केवल त्रुटियों और अनियमितताओं को उजागर करना ही नहीं है, बल्कि प्रशासन को मजूबत बनाने और वित्तीय प्रबंधन की गुणवत्ता में सुधार लाने की दिशा में सहयोग करना भी है। विभाग द्वारा प्रस्तुत सुझाव, प्रक्रिया-सुधार और जोखिम-आधारित ऑडिट पद्धतियाँ सरकार को बेहतर निर्णय लेने में सहायता करती हैं। इस प्रकार आईए एण्ड एडी पारदर्शिता और जवाबदेही को केवल प्रशासनिक दायित्व न मानकर सुशासन की बुनियादी धुरी के रूप में स्थापित करता है।

तेजी से बदलते आर्थिक और प्रशासनिक परिवेश में यह भी आवश्यक है कि वित्तीय प्रबंधन से जुड़े सभी हितधारक-केंद्र और राज्य सरकारें, सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम, स्थानीय निकाय तथा स्वायत्त संस्थाएँ- मानकीकृत प्रक्रियाओं और मजबूत आंतरिक नियंत्रण प्रणालियों को अपनाएं। आईए एण्ड एडी द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देश एवं क्षमता-विकास कार्यक्रम इस संस्थाओं को आधुनिक लेखा मानकों, जोखिम मूल्यांकन और अनुपालन आवश्यकताओं से बराबर रूप से अवगत कराते हैं। इससे संपूर्ण शासन-तंत्र में वित्तीय अनुशासन की संस्कृति विकसित होती है और नीतियों के क्रियान्वयन में पारदर्शिता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित होती है।

अंततः, वित्तीय पारदर्शिता और जवाबदेही एक स्वस्थ, शक्तिशाली और भरोसेमंद शासन-व्यवस्था की नींव है। जब सरकार, संस्थाएं और नागरिक तीनों तक साझा लक्ष्य-सतति, न्यायपूर्ण और पारदर्शी विकास के लिए प्रतिबद्ध होते हैं, तभी लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति प्रकट होती है। आईए एण्ड एडी इस प्रयास में केंद्रीय भूमिका निभाते हुए देश के सुशासन को अधिक सुदृढ़ और विश्वसनीय बनाने में निरंतर योगदान देता है।

महिला सशक्तिकरण



सुनीता सांगवान
पत्नी श्री उदयभान सिंह, सहायक लेखा अधिकारी

भारत का इतिहास केवल पुरुषों की वीरता और उपलब्धियों तक सीमित नहीं है। यहाँ की भूमि ने न केवल साहसी योद्धाओं को जन्म दिया है, बल्कि ऐसी नायिकाओं को भी जो अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक बाधाओं को पार करके समाज के लिए मिसाल बन गईं। महिलाओं का सशक्तिकरण, केवल आधुनिक युग का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति और इतिहास की आत्मा में निहित है। स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक सुधार और आधुनिक विकास में महिलाओं की भूमिका प्रेरक और अद्वितीय रही है।

सशक्तिकरण का अर्थ केवल पुरुषों के बराबर अधिकार पाना नहीं है। यह आत्मविश्वास, स्वतंत्रता, शिक्षा, सामाजिक न्याय और आर्थिक स्वतंत्रता का मिश्रण है। जब महिलाओं को इन क्षेत्रों में सशक्त किया जाता है, तब न केवल वे अपने जीवन को सुधारती हैं, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र की प्रगति में योगदान देती हैं। भारत में यह परंपरा प्राचीन काल से ही रही है, जहाँ राज्य और समाज के प्रमुख कार्यों में महिलाएँ अग्रणी रही हैं।

ऐतिहासिक उदाहरण

रानी लक्ष्मीबाई

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई भारतीय इतिहास की उन महान नायिकाओं में से एक हैं, जिन्होंने अपने साहस और नेतृत्व से आज भी हर भारतीय के हृदय में अमर स्थान बनाया। अंग्रेजों की अत्याचारपूर्ण नीतियों के विरोध में उन्होंने अपने राज्य की रक्षा के लिए तलवार उठाई और स्वतंत्रता के लिए अदम्य साहस दिखाया। उनका जीवन केवल वीरता की कहानी नहीं है, बल्कि यह महिला नेतृत्व और आत्मविश्वास का प्रतीक भी है।

रानी लक्ष्मीबाई ने अपने राज्य की सेना का नेतृत्व स्वयं किया, किले की सुरक्षा सुनिश्चित की और अंग्रेजों के खिलाफ रणनीतिक लड़ाई लड़ी। उन्होंने कहा था, "मैं अपने राज्य की रक्षा के लिए हर बाधा पार करूँगी।" यह उद्धरण आज भी भारत की हर महिला को प्रेरित करता है कि कठिन समय में भी साहस और संकल्प की शक्ति से किसी भी चुनौती को पार किया जा सकता है।

अहिल्या बाई होलकर

अहिल्या बाई होलकर केवल साहसी रानी ही नहीं थीं, बल्कि उन्होंने प्रशासन, न्याय और समाज सुधार में भी अनोखा योगदान दिया। उनके शासनकाल में न्यायप्रिय निर्णय, समाज में शिक्षा का प्रसार, स्वास्थ्य और मंदिरों की मरम्मत जैसी गतिविधियाँ हुईं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि महिला नेतृत्व केवल युद्ध या बाहरी संघर्ष तक सीमित नहीं, बल्कि प्रशासनिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण होता है।

अहिल्या बाई ने अपने राज्य को समृद्धि की ओर अग्रसर किया, किसानों के हितों की रक्षा की और प्रशासनिक प्रणाली में पारदर्शिता लागू की। उनके योगदान से यह स्पष्ट होता है कि महिला नेतृत्व राष्ट्र के विकास में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

सरोजिनी नायडू

सरोजिनी नायडू, जिन्हें 'भारत कोकिला' कहा जाता है, स्वतंत्रता संग्राम की महान नायिका थीं। उनके लेखन और भाषणों में समाज और राष्ट्र के प्रति गहरी संवेदनशीलता झलकती थी। उन्होंने महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

सरोजिनी नायडू ने भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में भाग लिया, महिला शिक्षा और सामाजिक सुधार के लिए प्रयास किया, और स्वतंत्र भारत की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के मार्ग को प्रशस्त किया। उनके प्रेरक उद्धरण और कविता आज भी युवा महिलाओं के लिए ऊर्जा और दिशा का स्रोत हैं।

अन्य प्रेरक महिलाएँ

दुर्गाबाई देशमुख ने सामाजिक सुधार और महिला शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दिया। उनके प्रयासों से महिलाओं को न केवल शिक्षा के अधिकार मिले, बल्कि समाज में उनकी भागीदारी भी सुनिश्चित हुई। इसी प्रकार, अनेक अन्य नायिकाएँ जिन्होंने शिक्षा, समाज सुधार, स्वास्थ्य और न्याय के क्षेत्र में योगदान दिया, वे सभी महिलाओं के सशक्तिकरण की मिसाल हैं।

राजनीति में महिलाएँ

आज की महिलाएँ राजनीति के हर क्षेत्र में सक्रिय हैं। इंदिरा गांधी, भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री, ने साबित किया कि महिला नेतृत्व निर्णायक और प्रभावशाली हो सकता है। वर्तमान में स्मृति ईरानी, निर्मला सीतारमण और अन्य महिलाओं ने अपने नेतृत्व और नीतियों से समाज और राष्ट्र में योगदान दिया है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी केवल प्रतिनिधित्व तक सीमित नहीं है। वे निर्णय प्रक्रिया, नीतियों का निर्माण और समाज के लिए योजना बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि आज महिलाएँ केवल वोट देने वाली नहीं, बल्कि नीति निर्धारण में निर्णायक शक्ति बन गई हैं।

विज्ञान और शिक्षा में महिलाएँ

विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में महिलाएँ लगातार सीमाएँ पार कर रही हैं। किरण मजूमदार शॉ और आंचल कुमार जैसी वैज्ञानिकों ने बायोटेक्नोलॉजी और चिकित्सा विज्ञान में योगदान दिया है। महिलाओं की यह भूमिका यह दिखाती है कि शिक्षा और शोध में महिलाओं की भागीदारी राष्ट्र की प्रगति के लिए अनिवार्य है। महिला शिक्षकों और शोधकर्ताओं ने छात्रों में जागरूकता, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित की है। इस प्रकार महिलाओं का योगदान केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति से जुड़ा हुआ है।

खेल और उद्यमिता में महिलाएँ

खेल जगत में पीवी सिंधु, मिताली राज और साइना नेहवाल ने न केवल देश का नाम रोशन किया, बल्कि यह दिखाया कि महिलाओं में अनुशासन, साहस और दृढ़ता की कमी नहीं है। उद्यमिता में भी महिलाएँ स्टार्टअप्स, टेक्नोलॉजी और सामाजिक उद्यमों में अपनी छाप छोड़ रही हैं।उनके संघर्ष और सफलता की कहानियाँ युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा हैं। यह उदाहरण बताता है कि जब महिलाओं को अवसर, संसाधन और समर्थन मिलता है, तब वे हर क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकती हैं।

सशक्तिकरण के माध्यम

शिक्षा

शिक्षा महिलाओं के सशक्तिकरण का सबसे मजबूत माध्यम है। शिक्षित महिला न केवल अपने जीवन को बेहतर बनाती है, बल्कि अपने परिवार और समाज को भी दिशा देती है। शिक्षा से महिलाएँ आत्मनिर्भर होती हैं और निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि होती है। शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं है, बल्कि यह सोचने, निर्णय लेने और नेतृत्व की क्षमता को भी विकसित करती है। जब महिलाएँ शिक्षित होती हैं, तो वे समाज में न्याय, समानता और अवसर की मांग कर सकती हैं।

आर्थिक स्वतंत्रता

आर्थिक रूप से सशक्त महिला अपने जीवन और समाज में बदलाव ला सकती है। स्वयं का व्यवसाय, स्वरोजगार और सरकारी नीतियों का लाभ लेकर महिलाएँ आर्थिक सुरक्षा प्राप्त करती हैं। आर्थिक स्वतंत्रता उन्हें अपने परिवार और समाज में निर्णय लेने की शक्ति देती है।

सामाजिक जागरूकता और नीति

सरकारी योजनाएँ, जागरूकता अभियान और सामाजिक संगठनों का योगदान महिलाओं को सशक्त बनाने में मदद करता है। बेटियों की शिक्षा, महिला स्वास्थ्य, घरेलू हिंसा के खिलाफ कानून – ये सभी माध्यम महिलाओं के सशक्तिकरण में अहम हैं।

चुनौतियाँ और समाधान

हालाँकि आज की महिलाएँ ऐतिहासिक महिलाओं की तरह साहसी और प्रतिभाशाली हैं, फिर भी उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। समाज में कहीं-कहीं रूढ़िवादी मानसिकता और भेदभाव अब भी महिलाओं को निर्णय लेने और नेतृत्व की भूमिकाओं से वंचित करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों को शिक्षा के अवसर कम मिलते हैं, जिससे उनकी क्षमता पूरी तरह विकसित नहीं हो पाती। इसके अलावा कामकाजी महिलाओं के लिए सुरक्षा, समान वेतन और सम्मान सुनिश्चित करना भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।

इन सभी चुनौतियों का समाधान शिक्षा, कानूनी संरक्षण, सामाजिक जागरूकता और नेतृत्व के माध्यम से किया जा सकता है। जब समाज, सरकार और हर नागरिक मिलकर महिलाओं को सशक्त बनाने में योगदान देगा, तभी वास्तविक परिवर्तन संभव होगा।

प्रेरक निष्कर्ष

भारत की धरती ने हमेशा वीरता, ज्ञान और करुणा की कहानियाँ जन्म दी हैं। आज की महिलाएँ उसी साहस और निष्ठा की विरासत को आगे बढ़ा रही हैं, और हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ रही हैं। उनके प्रयास, संघर्ष और सफलता से यह स्पष्ट होता है कि जब हर महिला अपने सपनों को सच करती है, समाज की दिशा बदलती है, और राष्ट्र की उड़ान को नई ऊँचाई मिलती है।



भारतः एक प्राचीन सभ्यता और आधुनिक दृष्टि



पीयूष श्योराण
पुत्र श्री उदयभान सिंह, सहायक लेखा अधिकारी

भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवंत और सनातन संस्कृति है जिसने हज़ारों वर्षों से मानवता को दिशा दी है। जब विश्व के कई देशों में सभ्यता का बीज भी नहीं पड़ा था, तब भारत में वेदों की ऋचाएँ गूँज रही थीं, विश्वविद्यालयों में ज्ञान का प्रसार हो रहा था, और समाज धर्म, नीति और विज्ञान की उन्नति के मार्ग पर अग्रसर था। यही कारण है कि भारत को विश्व की सबसे प्राचीन और निरंतर जीवित सभ्यता कहा जाता है।

हमारा देश केवल अपने इतिहास पर गर्व नहीं करता, बल्कि उस इतिहास को वर्तमान और भविष्य से जोड़ने की क्षमता भी रखता है। आज का भारत, जो डिजिटल तकनीक, अंतरिक्ष विज्ञान, और वैश्विक अर्थव्यवस्था में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, उसी भारत की संतान है जिसने "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे आदर्श मानवता को दिए थे। भारत ने सदियों से यह सिखाया है कि सच्ची प्रगति केवल बाहरी विकास नहीं, बल्कि आत्मिक उत्थान है - वह शक्ति जो व्यक्ति को समाज से जोड़ती है और समाज को मानवता से।

प्राचीन भारत की गौरवशाली विरासत

भारत की सभ्यता सिंधु घाटी से लेकर वैदिक काल, मौर्य, गुप्त और आधुनिक युग तक निरंतर विकसित होती रही है। हमारे पूर्वज केवल धर्म और दर्शन के ही नहीं, बल्कि विज्ञान, गणित, चिकित्सा, कला और साहित्य के भी अद्वितीय आचार्य थे। गणित में शून्य और दशमलव प्रणाली का आविष्कार भारत की देन है। खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने पृथ्वी के गोल होने

और उसके अपनी धुरी पर घूमने की बात कही थी। चरक और सुश्रुत ने आयुर्वेद और शल्य चिकित्सा की नींव रखी, जिनका प्रभाव आज के आधुनिक चिकित्सा विज्ञान पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय केवल शिक्षण संस्थान नहीं थे, बल्कि विश्व के पहले *ज्ञान के नगर* थे - जहाँ यूनान, चीन, तिब्बत और मध्य एशिया से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे। यह वह युग था जब भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था, न केवल धन-संपदा के लिए, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और सहिष्णुता के लिए भी।

कला, संगीत और साहित्य ने भी भारत की आत्मा को अमर बनाया। भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी जैसे नृत्य रूपों में आध्यात्मिकता का समावेश है, तो कालिदास और तुलसीदास की रचनाओं में प्रकृति और मानवता का गहरा मेल दिखाई देता है। ये सब भारत की उस दृष्टि के प्रतीक हैं जिसमें सुंदरता और सत्य एक-दूसरे के पूरक हैं।

भारतीय संस्कृति की आत्मा

भारत की संस्कृति का सार है - विविधता में एकता। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ, परंपराएँ, वेशभूषाएँ और विश्वास पद्धतियाँ हैं, पर सब एक सूत्र में बँधे हैं - भारतीयता के सूत्र में। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कामरूप तक – भले ही बोली, भोजन या पहनावा बदल जाए, पर हृदय में बसने वाली भावना एक ही है – भारत माता के प्रति प्रेम।

भारतीय जीवन दर्शन का आधार है 'धर्म' – केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन को नैतिकता और कर्तव्य के मार्ग पर ले जाने वाली शक्ति। इसी 'धर्म' ने भारत को बार-बार संकटों से उबारकर नई ऊर्जा दी है।

हमारे यहाँ कहा गया – *"धर्मो रक्षति रक्षितः"* – अर्थात् जो धर्म की रक्षा करता है, वही स्वयं संरक्षित रहता है।

यही कारण है कि भारत ने सदैव भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक संतुलन को भी महत्व दिया है।

यह भूमि राम, श्रीकृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक, की रही है – जिन्होंने सत्य, अहिंसा और करुणा के सिद्धांतों से विश्व को प्रेरित किया। भारत की संस्कृति सिखाती है कि सच्चा नेतृत्व

दूसरों पर शासन करना नहीं, बल्कि दूसरों को सशक्त बनाना है। और यही भावना आज भी भारत के युवाओं, उद्यमियों और नागरिकों में दिखाई देती है।

आधुनिक भारत का पुनर्जागरण

औपनिवेशिक काल ने भारत को आर्थिक, सांस्कृतिक और मानसिक रूप से कमजोर किया, परन्तु हमारी आत्मा अजेय रही। स्वतंत्रता संग्राम ने भारत को उसके गौरवशाली अतीत की याद दिलाई और आत्मविश्वास को पुनर्जीवित किया। रानी लक्ष्मीबाई, पटेल, सुभाष और भगत सिंह जैसे नेताओं ने केवल आज़ादी की नहीं, बल्कि आत्म-सम्मान की लड़ाई लड़ी।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने लोकतंत्र को अपनाया – जो इतनी विशाल और विविध जनसंख्या में एक साहसिक प्रयोग था। आज वही लोकतंत्र विश्व के लिए उदाहरण बन चुका है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, शिक्षा और रक्षा के क्षेत्र में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है।

इसरो का चंद्रयान और मंगलयान मिशन भारत की तकनीकी और वैज्ञानिक क्षमता के प्रतीक हैं। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे अभियानों ने युवा पीढ़ी को आत्मनिर्भर और नवाचार-प्रधान बनाया है। भारत ने दिखाया है कि संसाधनों की कमी कभी रचनात्मकता की कमी नहीं बनती – यदि इच्छाशक्ति प्रबल हो।

परंपरा और प्रगति का संगम

भारत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ परंपरा और आधुनिकता विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं।
यहाँ योग और आयुर्वेद जैसे प्राचीन विज्ञान आज भी प्रासंगिक हैं, और साथ ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), अंतरिक्ष अनुसंधान और फिनटेक जैसे आधुनिक क्षेत्र भी फलीभूत हो रहे हैं।

हमारे त्योहार, वेशभूषा, खानपान और परिवार व्यवस्था हमारी जड़ों की याद दिलाते हैं, जबकि हमारी शिक्षा, उद्यमिता और वैश्विक दृष्टि हमें भविष्य की ओर ले जाती है। यह वही संतुलन है जिसने भारत को सदैव विकासशील ही नहीं, बल्कि 'विकासशील आत्मा वाला देश' बनाए रखा है।

आज का युवा भारतीय न केवल अपने केरियर में सफल होना चाहता है, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की भी इच्छा रखता है। वह स्टार्टअप का संस्थापक हो या सेना का

जवान, सोशल मीडिया क्रिएटर हो या वैज्ञानिक – हर कोई भारत की नई कहानी लिख रहा है। यही नवयुग का भारत है – आत्मविश्वासी, संवेदनशील और आत्मनिर्भर।

वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका

विश्व राजनीति, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण नीति में भारत आज एक निर्णायक भूमिका निभा रहा है। चाहे जी-20 शिखर सम्मेलन हो या संयुक्त राष्ट्र के मंच, भारत ने "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" का संदेश दिया है। भारत अब केवल आर्थिक शक्ति नहीं, बल्कि नैतिक शक्ति भी है।

योग, ध्यान और आयुर्वेद जैसे भारतीय विचार वैश्विक स्वास्थ्य और जीवनशैली का हिस्सा बन चुके हैं। दुनिया अब यह समझ रही है कि प्रगति केवल GDP से नहीं, बल्कि संतुलित जीवन और आंतरिक शांति से मापी जाती है – और यही भारत का योगदान है। जलवायु परिवर्तन, शांति स्थापना, या विकासशील देशों की आवाज़ को उठाने में भारत की भूमिका विश्व मंच पर सम्मानित हो चुकी है।

नवभारत: भविष्य की दृष्टि से

भविष्य का भारत केवल तकनीकी रूप से उन्नत नहीं होगा, बल्कि अपने नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से भी सशक्त रहेगा। यदि हम अपनी शिक्षा प्रणाली में प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का संगम कर सकें, तो हम फिर से ज्ञान के विश्वगुरु बन सकते हैं। भारत के युवाओं में असीम ऊर्जा और कल्पनाशीलता है। जरूरत है तो केवल सही दिशा और विश्वास की। जब हर भारतीय यह सोच ले कि "मेरा देश मेरी जिम्मेदारी है," तब विकास केवल नीतियों से नहीं, बल्कि लोगों की चेतना से उपजेगा।

सशक्त भारत का सपना केवल सरकारों का नहीं, बल्कि हर नागरिक का संकल्प होना चाहिए। जब हर व्यक्ति अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता, ईमानदारी और करुणा का परिचय देगा, तभी भारत का वास्तविक उत्थान संभव होगा। विकास का अर्थ केवल ऊँची इमारतें या तेज़ अर्थव्यवस्था नहीं है, बल्कि वह समाज है जहाँ हर व्यक्ति को समान अवसर, सम्मान और सुरक्षा मिले।

निष्कर्ष

भारत की आत्मा उसके इतिहास, संस्कृति और मानवीयता में बसी है। यह वह भूमि है जहाँ ऋषियों ने ब्रह्मज्ञान खोजा, जहाँ सम्राट अशोक ने अहिंसा को अपनाया, और जहाँ गांधी ने सत्य और अहिंसा से साम्राज्य को झुका दिया।

आज का भारत विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी है, पर उसका हृदय अब भी वही है – जो हर प्राणी में ईश्वर का दर्शन करता है। यही भारत की वास्तविक शक्ति है: अतीत की जड़ों से जुड़कर भविष्य की उड़ान भरना।

जैसा कि भारत के महान नेता अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था –

"भारत एक जीवित, जाग्रत राष्ट्रपुरुष है; जिसकी अपनी आत्मा है, अपनी पहचान है।"

और यही सत्य आज भी हर भारतीय के मन में गूँजता है –

"भारत केवल एक देश नहीं, एक संस्कृति है; केवल एक भू-भाग नहीं, एक भावना है। जब तक यह भावना जीवित है, भारत अमर रहेगा।"



मेरी कश्मीर यात्रा



दीपक कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

सरकारी सेवा में आने के कारण मैंने अपना काफी समय यात्राएं करने में लगाया है। मैं पहले बैंगलोर गया जहां मैंने अपनी सरकारी सेवा के शुरुआती महत्वपूर्ण 04 वर्ष व्यतीत किए। बैंगलोर और आस पास के कुछ रमणीय स्थलों जैसे मैसूर, देवस्थानम तिरुपति आदि मैं परिवार सहित घूमा। उसके पश्चात् स्थानांतरण जबलपुर, मध्यप्रदेश में होने के पश्चात् यहां भी मैंने परिवार सहित मध्यप्रदेश के मशहूर स्थानों जैसे अमरकंटक, उज्जैन, इंदौर का दौरा किया। सरकारी सेवा में होने के कारण हर ब्लॉक वर्ष में मिलने वाली एक अखिल भारतीय छुट्टी यात्रा रियायत (एल.टी.सी.) में मैंने राजस्थान के कुछ प्रसिद्ध स्थलों की सैर भी की जिनमें अजमेर, जयपुर, जोधपुर प्रमुख थे।

सरकारी सेवा में पदस्थापना मेरे गृह नगर नई दिल्ली से बाहर होने के कारण घर आना-जाना भी यात्राएं ही होती थी परन्तु वे जिम्मेदारियों का भी बोध कराती थीं। अक्सर घर आने के संयोग केवल त्यौहारों पर ही होते थे विशेष रुप से रक्षाबंधन एवं दीपावली और दीपावली के पश्चात् भाई दूज आदि के उत्सव जिन्हें मैं अपने परिवार के सम्मुख रहकर ही मनाना चाहता था।

सरकारी सेवा में ही विशेषकर राजभाषा कार्मिक होने के कारण मुझे प्रतिवर्ष गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित किए जाने वाले हिंदी दिवस एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों में सूरत, पुणे और गांधीनगर जाने का अवसर भी मिला। वहां के विभिन्न पर्यटन स्थलों को भी नजदीक से देखने और समझने का मौका मिला।

इतनी यात्राएं करने के पश्चात् भी मेरा मन शांत नहीं हुआ था। इसकी एक वजह प्रसिद्ध शायर ख़्वाजा मीर दर्द का एक मशहूर शेर भी था। "***सैर कर दुनिया की गाफिल, ज़िंदगानी फिर कहाँ। ज़िंदगी गर कुछ रही तो ये जवानी फिर कहाँ***" जिसका अर्थ है कि अरे लापरवाह/बेखबर व्यक्ति, दुनिया की सैर कर लो क्योंकि जीवन बार-बार नहीं मिलता और अगर जीवन बचा भी रहा, तो यह जवानी फिर लौटकर नहीं आएगी, इसलिए इस पल का आनंद उठाओ और दुनिया देखो। यह शेर जीवन की क्षणभंगुरता और घूमने के महत्व पर जोर देता है और अक्सर यात्रा व जीवन के अनुभवों से जोड़कर देखा जाता है।

बैंगलोर एवं मध्यप्रदेश में रहने के दौरान ही मेरी इच्छा कश्मीर यात्रा की थी परन्तु कोई संगी-साथी न मिलने के कारण हमेशा ये यात्रा टलती रही थी। वैसे इसके अन्य कई कारण थे कि मैं छुट्टियों के दौरान अपना अधिकतम समय अपने परिवार के साथ ही व्यतीत करना पसंद करता था। साथ ही, उपरोक्त दोनों जगहों से कश्मीर की यात्रा अधिक समय, श्रम एवं धन की मांग करती थी जिनमें से कुछ मेरे पास कभी पर्याप्त मात्रा में नहीं रहा।

मध्यप्रदेश से मेरा समयबद्ध स्थानांतरण जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर शहर में हो गया था। पहले तो यहाँ के मौसम को लेकर मन में संशय बना रहा था कि यहाँ के अत्यंत ठंडे मौसम में कैसे अपने आपको ढ़ाल सकूंगा परंतु मई माह के शुरुआती सप्ताह में मौसम थोड़ा अनुकूल हो चुका था। फिर हिम्मत जुटाई और निकल पड़ा श्रीनगर में तैनाती पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने।

धर्मपत्नी जी ने परिवार को भी श्रीनगर भ्रमण के लिए साथ लेकर चलने को कहा परन्तु मैंने उचित समय आने तक प्रतीक्षा करने का आग्रह किया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। एक साल तक परिवार से दूर रहकर सरकारी सेवा में मन लगाया और सही समय आने की बाट जोहने लगा। संयोगवश हमारे पुराने कार्यालय के एक वरिष्ठ कार्मिक जिनके साथ हमारे परिवार जैसे रिश्ते थे और हम सब आपस में एक पारस्परिक सहृदयता का संबंध रखते थे, की एल.टी.सी. पर श्रीनगर यात्रा करने की योजना का पता चला। इस तथ्य को मैंने पत्नी जी को बताया वे बहुत खुश हुईं और उन्हें भी सपरिवार श्रीनगर ले चलने के विषय में अनुरोध करने लगीं। मेरा स्वयं का मन भी श्रीनगर के रमणीय स्थलों को घूमने का था और एक साल से भी अधिक समय व्यतीत होने पर भी मुझे ये अवसर नहीं मिल पाया था। इसलिए मैंने भी इस अवसर का लाभ उठाने में तत्परता दिखाई और पत्नी एवं दोनों सुपुत्रियों को भी इस यात्रा में सम्मिलित करने का निर्णय लिया।

ये यात्रा जून माह में होनी थी और श्रीनगर में कार्यरत होने के कारण सभी के ठहरने, घूमने के लिए गाड़ी और खाने-पीने की व्यवस्था करने का दायित्व मैंने स्वत: ही अपने ऊपर ले लिया। तब शुरू हुई सभी सदस्यों के लिए आरामदायक यात्रा कराने के लिए खोजबीन। पहले तो यह तय करना था कि हमें कश्मीर यात्रा में कहाँ-कहाँ घूमने जाना है। काफी परिश्रम के बाद मैंने यह तय किया कि हम गुरेज़ वैली, पहलगाम, गुलमर्ग और फिर श्रीनगर के अंदर ही स्थित प्रसिद्ध स्थलों का भ्रमण करेंगे। इन सभी स्थानों पर घूमने के लिए हमारे पास कुल 05 दिन का समय था। फिर गाड़ी की व्यवस्था की गई और गाड़ी चलाने वाले सज्जन बड़े सहृदय व्यक्ति थे। इसलिए हमें कहीं भी घूमने में कोई समस्या उत्पन्न नहीं हुई थी।

होटल के बढ़ते किराए के कारण मैंने बेमिना, श्रीनगर के सरकारी आवास में रह रहे अपने साथियों से बातचीत की और संयोग से उनमें से एक ऐसा सरकारी आवास मुझे मिल गया जिसमें मूलभूत सुविधाओं के साथ रसोई की व्यवस्था भी थी। ये निर्णय लिया गया कि घर में नाश्ता और समय रहने पर रात का खाना भी दोनों गृहिणियाँ बना लेंगी। उस घर की व्यवस्था करने के लिए आज भी मैं अपने उन साथी का ऋणी हूँ।

फिर आया यात्रा का शुभांरभ करने का दिन जिसमें मुझे दोनों परिवारों के साथ दिल्ली से श्रीनगर की हवाई यात्रा करनी थी। धर्मपत्नी जी और बड़ी पुत्री पहले भी कई बार हवाई यात्रा कर चुके थे परन्तु छोटी पुत्री के लिए हवाई यात्रा पहला ही अनुभव था जिसके लिए वह कई दिनों से अत्यधिक उत्साहित थी। बहरहाल उस दिन श्रीनगर पहुंचते हुए हमें रात्रि हो गई थी इसलिए हमने खाना खा कर आराम करने का निश्चय किया। अगले दिन से हमने अपनी गुरेज वैली की यात्रा शुरु की तो सभी रोमांचित थे। जून के दिनों में श्रीनगर में भी गर्मी होती है और गुरेज पहाड़ों से घिरा होने के कारण अपेक्षाकृत ज्यादा ठंडा था। गुरेज तक जाने और वापस आने में हमें दो दिन लगे जिसे राज़दान पास पर बर्फ की उपस्थिति ने सभी लोगों को विशेषकर बच्चों को आह्लादित कर दिया। अगले दिन पहलगाम यात्रा में पिट्ठुओं की सवारी की जोकि एक जोखिम से भरा कार्य भी था क्योंकि सफर कई उतार-चढ़ाव से भरा हुआ था और मुझे अपनी दोनों पुत्रियों की चिंता हो रही थी कि वे कैसे इस सफर को तय कर पाएंगी। परन्तु ईश्वर की कृपा से सब कुछ ठीक-ठाक रहा और श्रीनगर पहुंच कर दिन का अंत हुआ। अगले दिन गुलमर्ग पहुंचे तो मौसम ठीक था परन्तु यात्रा शुरु करने से पहले ही ज़ोरदार बारिश होने लगी जिससे छोटी पुत्री बहुत अधिक असहज होकर रोने लगी। इस पर सभी सदस्यों ने यात्रा न करने का निर्णय लिया और श्रीनगर लौट गए। आखिरी दिन हम श्रीनगर के स्थानीय स्थलों को घूम रहे थे और स्थानीय खाने-पीने का भी लुत्फ लिया।

इस तरह हमारी श्रीनगर यात्रा अपने अंतिम पडाव पर पहुंची और धर्मपत्नी जी ने दोनों बच्चियों सहित गृह नगर दिल्ली जाने के लिए श्रीनगर हवाई अड्डे का रुख किया। मौसम अनुकूल न होने के कारण बर्फ नहीं मिली इसकी टीस पत्नी के मन में रही। फिर से बर्फबारी देखने के लिए श्रीनगर यात्रा कराने का अनुरोध कर दिया जिसे मैंने मौन स्वीकृति दी।

इस स्वीकृति को पूर्ण रूप देने के लिए वर्ष 2026 में नववर्ष के आगमन के साथ ही फिर से मैं परिवार को श्रीनगर घुमाने ले आया। इस बार केवल हम चार लोग ही थे। इस बार की यात्रा में मुख्यत: केवल दो जगहों गुलमर्ग (क्योंकि पिछली बार ये हम ठीक से घूम नहीं पाये थे) एवं सोनमर्ग और फिर बाकी बचे समय में श्रीनगर के रह गए स्थानीय स्थलों को घूमने का पूर्व निर्धारित कार्यक्रम था। पहले दिन हमने निशात बाग, लाल चौक घूमने में व्यतीत किया। इस दौरान पत्नी ने बड़ी बेटी सहित डल झील में वॉटर स्कूटर चलाने का भी लुत्फ लिया। फिर कुछ खा-पीकर हम होटल लौट आए। अगला दिन हमारी यात्रा का पहला सुहावना दिन था क्योंकि सोनमर्ग बर्फ से ढ़का हुआ था जहाँ पहुंचकर हम सबने बर्फ पर स्लेज, पिट्ठुओं पर यात्रा की और बच्चों ने 'स्नोमैन' भी बनाया।

अगले दिन हम गुलमर्ग के लिए निकल गए जहां पहुंचने पर हल्की बर्फबारी ने हमारा सहर्ष स्वागत किया। इससे माँ और दोनों बेटियां हर्षोउल्लास से उछल पड़े। ऐसा लगा कि चिर प्रतीक्षित घटना ने उन्हें भावविभोर कर दिया है। गुलमर्ग में दोनों गंडोला राईडों (फेज-1 और फेज-2) का लुत्फ लिया और बर्फ में खूब मस्ती की। बर्फबारी इतनी हो रही थी कि पूरा गुलमर्ग श्वेत-श्याम चलचित्र की तरह लग रहा था।

इस तरह पूरा दिन गुलमर्ग में बिताने के बाद देर शाम हम लौटने लगे तो पता लगा कि हमारे ड्राईवर को स्थानीय पुलिस वालों ने उनकी गाड़ी के टायरों में स्नो-चेन न होने के कारण टंगमर्ग चले जाने को कह दिया था। इस पर हमें एक गाड़ी की व्यवस्था करनी पड़ी जो स्नो-चेन से लैस थी। इस स्नो-चेन की सहायता से गाड़ियाँ बर्फ पर ज्यादा फिसलती नहीं हैं मगर उनकी गति अवश्य ही कम रहती थी। उस दौरान सभी को घबराहट हुई क्योंकि एक तो रात का सफर और गाड़ियाँ ब्रेक लगाने के बाद भी थोड़ी-थोड़ी फिसल रही थीं। जैसे-तैसे हम लोग टंगमर्ग पहुंचे जहां हमारी गाड़ी में बैठकर हम श्रीनगर पहुंचे। ड्राईवर ने बताया कि बर्फ रोमांच का अनुभव तो देती ही है परंतु बर्फ से घिरे रोड पर यात्रा करना बहुत ही दुष्कर और खतरनाक भी होता है। श्रीनगर पहुंचकर सबने राहत की सांस ली। फिर अगले दिन धर्मपत्नी जी दोनों बच्चियों को लेकर सहर्ष दिल्ली रवाना हुईं।

इस तरह हमारी कश्मीर यात्रा परिपूर्ण (बर्फबारी न देख पाने से पहले की यात्रा धर्मपत्नी जी के लिए अपूर्ण रही थी) हुई और काफी रोमांचकारी एवं कुछ खतरनाक अनुभव भी दे गई। यात्रा के दौरान बर्फ पड़ने से परिवार को असीम आनंद की प्राप्ति हुई और मुझे इस संतोष की कि ये यात्रा परिवार की सभी तरह से इच्छाओं को पूरा करने वाली सिद्ध हुई। सभी ने विशेषकर गुलमर्ग यात्रा का पूरा लुत्फ उठाया और बर्फबारी को प्रत्यक्ष रूप से देख पाने से पत्नी जी और दोनों सुपुत्रियों की खुशी देखकर मैं भी प्रसन्न और संतुष्ट था।



गंगबल झील (कश्मीर): ट्रैकिंग का सफर



अमन डबास
लेखापरीक्षक

भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में स्थित कश्मीर दुनिया भर में सबसे सुंदर पर्यटन स्थलों में से एक है। कश्मीर खूबसूरत घाटियों के साथ-साथ सेब के बागों, सुंदर पहाड़ों और झीलों के लिए प्रसिद्ध है। प्राकृतिक सुंदरता के अलावा पहाड़ और झीलें एडवेंचर प्रेमियों को बेहद आकर्षित करती हैं। अगर आप कश्मीर घूमने के लिए जा रहे हैं तो आपको एक बार यहां की ट्रैकिंग का भी मजा जरूर लेना चाहिए।



कश्मीर की खूबसूरती में जिन्होंने सबसे ज्यादा चार-चांद लगाएं हैं, वो है यहां की झीलें हैं। यहां की कुछ झीलें घाटियों में फैली हुई हैं तो कुछ पहाड़ों के ऊपर स्थित हैं। वैसे ये झीलें कहीं भी मौजूद हो, इनकी अपनी सुंदरता और राजसी वातावरण आपको मोहित कर देगा। कश्मीर ग्रेट लेक्स ट्रैक पर्यटकों को कश्मीर की सबसे खूबसूरत घाटी और पहाड़ों में फैली विभिन्न झीलों से होकर ले जाता है। इस ट्रैक के दौरान अत्यधिक मानसिक और शारीरिक मेहनत का सामना किया जाता है क्योंकि यह एक कठिन ट्रैक है जो चढ़ाई के साथ जंगलों, झरनों और हिमनदों के बीच से होकर जाता है। ट्रैक के दौरान आपको प्रकृति के सुंदर नजारों के बीच, विभिन्न प्रकार के फूलों की घाटियों और ऊंचाइयों पर घूमने का मौका मिलता है।

पिछले साल मुझे अपने दोस्तों के साथ कश्मीर ग्रेट लेक्स ट्रैक की प्रसिद्ध झील गंगबल की ट्रैकिंग का मौका मिला था। गंगबल झील की ट्रैकिंग नारानाग नामक छोटे से गाँव से शुरू होती है इस गाँव में एक प्राचीन काल के मंदिर का स्मारक ढांचा है जिसका निर्माण महान शासक ललितादित्य मुक्तपीड द्वारा करवाया गया था। आप गाँव के स्थानीय लोगों के साथ बातचीत कर सकते हैं और उनके साथ अनुभवों को साँझा कर सकते हैं। इस ट्रैकिंग का सबसे कठिन भाग इसकी शुरुआती दुर्गम चढ़ाई है जो आपको थका देगी। रास्ते में आपको एक आर्मी कैंप से होकर जाना होता है जो आपको सुरक्षित महसूस कराता है और साथ ही आपको आराम करने में सुविधा हो जाती है।



आर्मी कैंप पर रुकने से आपको अपने शारीरिक थकान को दूर करने और यहाँ की सुंदरता का आनंद लेने का समय मिलता है। आर्मी कैंप से निकलते ही कुछ किलोमीटर बाद नंद्कोल झील आपको अपनी तरफ आकर्षित करेगी, आप उसके पास बैठ के कुछ समय व्यतीत कर सकते हैं आप को एक अलग ही शांति महसूस करोगे, यहाँ से अपनी गंगबल झील के पास की यात्रा जारी रख सकते हैं और इसके आसपास के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले सकते हैं जो की समुंदर तल से 3775 मीटर पर स्थित है ।

हमें गंगबल झील से वापिस लौटते समय रास्ते में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन एक अनुभवी मित्र हमारे साथ था। हम रास्ता भटक गए थे काफी समय लगा उसने हमें एक सही रास्ता दिखाया फिर हमें सही ट्रेक मिला फिर वहां से हमने अपना वापसी का रास्ता पूरा किया।

ट्रैकिंग के दौरान, जब आप गंगबल झील के पास पहुंचते हैं, तो आपका जीवन स्तर बदल जाता है। यहाँ की शांति, आपको आत्मा की गहराई में एक नई परिपूर्णता की अनुभूति कराती है। गंगबल झील का नाम सुनते ही मन में एक अद्वितीय और प्रेरणादायक अनुभव उत्पन्न होता है, जो आपकी यात्रा को यादगार बना देता है।



अच्छे आचरण (नैतिकता) का महत्व



इज़हार अहमद शाह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मानव जीवन में 'अच्छे आचरण' या 'नैतिकता' का स्थान सबसे ऊंचा है। इंसान की असली पहचान उसके धन-दौलत या ऊंचे पद से नहीं बल्कि उसके व्यवहार और चरित्र से होती है। नैतिकता का अर्थ है–दूसरों के साथ विनम्रता, ईमानदारी और प्रेमपूर्वक व्यवहार करना। एक प्रसिद्ध कहावत है, "यदि धन खो जाए तो कुछ नहीं खोता, स्वास्थ्य खो जाए तो कुछ खोता है, लेकिन यदि चरित्र (आचरण) खो जाए तो सब कुछ खो जाता है।"

एक सदाचारी व्यक्ति समाज में सम्मान और स्नेह का पात्र होता है। मीठी वाणी, बड़ों का सम्मान, छोटों से प्यार और मुसीबत में दूसरों की मदद करना ही श्रेष्ठ आचरण की निशानियाँ हैं। अच्छे संस्कार न केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारते हैं बल्कि एक सभ्य समाज के निर्माण में भी मदद करते हैं। जिस व्यक्ति का व्यवहार कठोर और अभिमानी होता है, लोग उससे दूर भागते हैं, चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो।

आज के आधुनिक युग में, जहाँ लोग भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे भाग रहे हैं, नैतिक मूल्यों की रक्षा करना और भी आवश्यक हो गया है। विद्यालयों और परिवारों में बच्चों को शुरू से ही नैतिकता की शिक्षा देनी चाहिए ताकि वे भविष्य में जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

निष्कर्षतः, अच्छे संस्कार और नैतिकता वह सुगंध है जो मनुष्य के जीवन को महका देती है। यदि हमारा आचरण सही है, तो हम न केवल खुद सफल होंगे बल्कि दुनिया को भी एक बेहतर स्थान बना सकेंगे। सफलता का वास्तविक मार्ग अच्छे चरित्र से ही होकर गुजरता है।

आखिर इतना ही कहता हूँ हम ऐसे विभाग में हैं जो पूरे भारत में बेहतर विभाग के रूप में जाना जाता है। इसलिए हमें हर एक के साथ अच्छे आचरण और अच्छा बर्ताव के साथ रहना चाहिए। अल्लाह ताला हमें अच्छे इंसान के साथ-साथ आचरण वाला इंसान बनाये।

पासवर्ड



सतीश महानूरी
से.नि. वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वह पल याद है मुझे जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो कक्षा से बाहर शौच और किसी अन्य कारण से जाना पड़ता तो एक लकड़ी की बनी पट्टी दी जाती थी जो कक्षा में मॉनीटर के संरक्षण में रहती थी। यह इस बात का प्रमाण होता था कि यह छात्र अनुमति लेकर बाहर आया है। यदि कक्षा के बाहर उसे पकड़ा जाता तो वह यह पट्टी, जिसे हम 'पास' बोलते थे, दिखाकर निकल सकता था। यानि कक्षा से अंदर या बाहर जाने के लिए एक पास की आवश्यकता होती थी। उस समय यह 'पास' छात्र के लिए महत्वपूर्ण होता था।

समय बदलता गया, तकनीक बदलती गयी और फिर से यह शब्द नए रूप में 'पासवर्ड' बन के आया और हमारे जीवन में ऐसे प्रवेश कर गया कि हम साँस लेना भूल सकते हैं परंतु 'पासवर्ड' नहीं।

जहाँ तक मुझे याद है पहला 'पासवर्ड' मैंने अपनी पहली ई-मेल के लिए बनाया। परंतु तब इसे बनाना सहज था। आम तौर पर याद रहने वाला नाम या अंक ही प्रयोग में लाया जाता था, अभी भी ऐसा ही चलन है। उसके बाद ''फेसबुक' प्रारंभ हुआ तो फिर से पासवर्ड का प्रयोग करना पड़ा। उस समय डाटा की चोरी, हैकिंग और साइबर क्राइम आज की तुलना में शून्य के बराबर था। यह चीजें ऐसी थीं जिसमें वित्तीय जोखिम नहीं था।

अब एक और चरण आया जब 'नेट बैंकिंग' शुरू हुई। मैं बड़ी देर तक इससे बचता रहा, कुछ डर के कारण और कुछ पासवर्ड को कंठस्थ करने के कारण। इससे ज्यादा डर यह था कि कहीं यह प्रक्रिया असुरक्षित तो नहीं है। परंतु यह सुविधा ऐसी थी कि इसे उपयोग में लाना ही पड़ा। इस कारण एक और पासवर्ड बनाना पड़ा जिसे मस्तिष्क के कोने में छिपा कर रखा ताकि कोई ताँक-झाँक भी न कर सके।

अन्य चरणों में जो पासवर्ड/पिन बनाने पड़े उसमें ए.टी.एम., आयकर, पी.एफ.एम.एस., ओ.ऐ.ओ.एस., लैपटॉप, कार्यालय हेतु आधिकारिक ई-मेल सम्मिलित है। कहने का तात्पर्य है कि

जीवन पासवर्ड के बिना अधूरा है और इस सब को याद रखना इतना सरल नहीं। जो जान लगानी पड़ती है, इन्हें याद रखने के लिए। समस्या तब और गंभीर हुई जब सुरक्षा हेतु छः माह उपरांत इसे बदलना अनिवार्य किया गया।

यहाँ तक भी ठीक था पर अब पासवर्ड बनाते समय एक अक्षर कैपिटल, एक अंक और एक चिन्ह डालना भी आवश्यक है। हर एक अकाउंट के लिए सही आई.डी. और पासवर्ड डालना जरूरी है ताकि अकाउंट खुल सके।

इस समस्या के समाधान के लिए भी एक उपाय सूझा। वह यह कि सारे आई.डी. और पासवर्ड लैपटॉप में रख लो और उस फाइल को सुरक्षित रखने के लिए एक और पासवर्ड रख लो। कैसा लगाः फिर से एक और पासवर्ड।

यदि हम इस सारे प्रकरण को आध्यात्मिकता से जोड़ें, तो मैं बार-बार यह सोचता हूँ कि हम कहते हैं कि पूजा तो करता हूँ परंतु परमात्मा से जुड़ नहीं पाता हूँ। मंदिर में बैठे होते हैं पर मन कहीं और होता है। कहीं हम यही गलती तो नही करते कि आई.डी. और पासवर्ड गलत डालते हैं और इस कारण परमात्मा से जुड़ने का अकाउंट नही खुलता।

इस पर विचार करना, मैं आप पर छोड़ता हूँ। ऐसा प्रतीत होता है मानो जीवन का आरंभ और अंत पासवर्ड ही है।



कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी के भविष्य में क्रांति



निलोफर तबस्सुम
वरिष्ठ लेखाकार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) 21वीं सदी की सबसे परिवर्तनकारी तकनीकों में से एक बनकर उभरी है, जो उद्योगों, अर्थव्यवस्थाओं और दैनिक जीवन को बदल रही है। कंप्यूटर विज्ञान के एक क्षेत्र के रूप में, AI ऐसे सिस्टम बनाने पर केंद्रित है जो ऐसे कार्य कर सकें जिनके लिए सामान्यतः मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है, जैसे सीखना, तर्क करना, समस्या समाधान, धारणा और भाषा को समझना।

पिछले कुछ दशकों में, AI सैद्धांतिक अवधारणाओं से आगे बढ़कर व्यावहारिक उपयोगों तक पहुँच गई है—जैसे सर्च इंजन से लेकर स्वयं चलने वाली कारों तक।

मूल रूप से, AI मशीनों में मानव बुद्धि का अनुकरण है, जिन्हें सोचने और जटिल कार्यों को स्वचालित रूप से करने के लिए डिजाइन किया जाता है।

AI सिस्टम को आमतौर पर दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है:

1. संकीर्ण AI (Narrow AI या Weak AI)

यह AI का वह रूप है जिसे किसी विशेष कार्य को करने के लिए बनाया गया है, जैसे चेहरा पहचानना, भाषा अनुवाद या स्वचालित ड्राइविंग। यह एक ही कार्य में उत्कृष्ट होता है लेकिन अलग-अलग कार्यों में सामान्य रूप से लागू नहीं हो सकता।

2. सामान्य AI (General AI या Strong AI)

यह AI का उन्नत रूप है, जिसमें ऐसी बुद्धिमत्ता होती है जो मनुष्य की तरह किसी भी बौद्धिक कार्य को कर सके। यह अभी तक पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है और अधिकतर सैद्धांतिक स्तर पर ही है।

AI सिस्टम जटिल एल्गोरिद्म, डेटा प्रोसेसिंग और मशीन लर्निंग मॉडल पर आधारित होते हैं। मशीन लर्निंग, AI का एक भाग है, जो सिस्टम को अनुभव से सीखने और बिना स्पष्ट रूप से प्रोग्राम किए सुधार करने की क्षमता देता है।

मशीन लर्निंग के तीन मुख्य प्रकार होते हैं:

1. पर्यवेक्षित अधिगम (Supervised Learning)

इस विधि में AI सिस्टम को लेबल किए गए डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे वह इनपुट और आउटपुट के बीच संबंध सीखता है। इसका उपयोग इमेज पहचान और भविष्यवाणी विश्लेषण में होता है।

2. अपर्यवेक्षित अधिगम (Unsupervised Learning)

इसमें सिस्टम को बिना लेबल वाले डेटा दिए जाते हैं और वह स्वयं पैटर्न व संबंध खोजता है। इसका उपयोग क्लस्टरिंग और एसोसिएशन कार्यों में होता है, जैसे बाजार विश्लेषण या ग्राहक विभाजन।

3. सुदृढ़ीकरण अधिगम (Reinforcement Learning)

यह एक पुरस्कार-आधारित सीखने की प्रक्रिया है जिसमें AI अपने वातावरण के साथ इंटरैक्ट करके और पुरस्कार या दंड के माध्यम से सीखता है। इसका उपयोग रोबोटिक्स, गेमिंग और स्वायत्त प्रणालियों के विकास में किया जाता है।



कश्मीर - संस्कृति से समृद्ध



जैनब कुबरा
सुपुत्री श्रीमती निलोफर तबस्सुम,
वरिष्ठ लेखाकार

"यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है।" (अमीर खुसरो)

कश्मीर निस्संदेह एक समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत का धनी है। इस क्षेत्र की संस्कृति मध्य एशियाई, फ़ारसी प्रभावों का एक सुंदर संगम है। अपने पारंपरिक संगीत के लिए प्रसिद्ध, कश्मीरी लोक गीत सितार और संतूर की मधुर धुनों के साथ गूंजते हैं। कश्मीरी हस्तशिल्प, विशेषकर पश्मीना शॉल और बारीकी से डिजाइन किए गए कालीन, पीढ़ियों से निखरी कारीगरी को दर्शाते हैं।

कश्मीर का खान-पान सुगंधित मसालों का एक मनमोहक मिश्रण है, जिसमें वाज़वान नामक बहु-व्यंजन भोज एक प्रमुख आकर्षण है। यहाँ की कलात्मक अभिव्यक्ति घाटी की लकड़ी की मस्जिदों और बारीकी से नक्काशीदार घरों की सजावट में भी दिखाई देती है, जो कश्मीरी समाज की समन्वयकारी प्रकृति को दर्शाती है। कश्मीर अपनी बर्फ से ढकी पहाड़ियों, प्रसिद्ध मस्जिदों और स्थानीय हस्तशिल्प के लिए जाना जाता है। घाटी के बाग-बगीचे और झीलें दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

कश्मीर अपने वन्यजीवों के लिए भी प्रसिद्ध है, जिनमें जंगली बिल्लियाँ, हिमालयी काला भालू, हिमालयी मारमोट, कस्तूरी मृग और जंगली बकरियाँ शामिल हैं। पर्यटन की बात करें तो हाउसबोट और पारंपरिक छोटी लकड़ी की नावें, जिन्हें शिकारा कहा जाता है, कश्मीर की झीलों में आम हैं। रबाब, तुम्बखनारी, दुकरा, नौत, डफली और सारंगी जैसे वाद्ययंत्र कश्मीरी शादियों में प्रसिद्ध हैं।

कश्मीर पर्यटकों को इतना पसंद आने का एक कारण यहाँ के लोगों की गर्मजोशी और मेहमाननवाज़ी है। कश्मीरी लोग अपनी दयालुता और दूसरों की मदद करने की इच्छा के लिए

जाने जाते हैं। जो लोग इस स्वर्ग जैसी घाटी में आ चुके हैं, वे भली-भांति जानते हैं कि यहाँ के लोग अपने मेहमानों को स्वागत करने का लिए हर संभव प्रयास करते हैं।

ढीले-ढाले ऊनी लबादे, जो टखनों तक पहुँचते हैं, जिन्हें फ़ेरन कहा जाता है, में कश्मीरी आसानी से पहचाने जाते हैं। आगंतुकों का अक्सर पारंपरिक कश्मीरी आतिथ्य से स्वागत किया जाता है, जिसमें उन्हें कहवा की एक प्याली या सात व्यंजनों वाली थाली, जिसे वाज़वान कहा जाता है, परोसी जाती है। कश्मीरी अपनी संस्कृति, पारंपरिक भोजन, मेहमाननवाज़ी और सुंदरता के लिए जाने जाते हैं।



वायुमंडलीय प्रदूषण

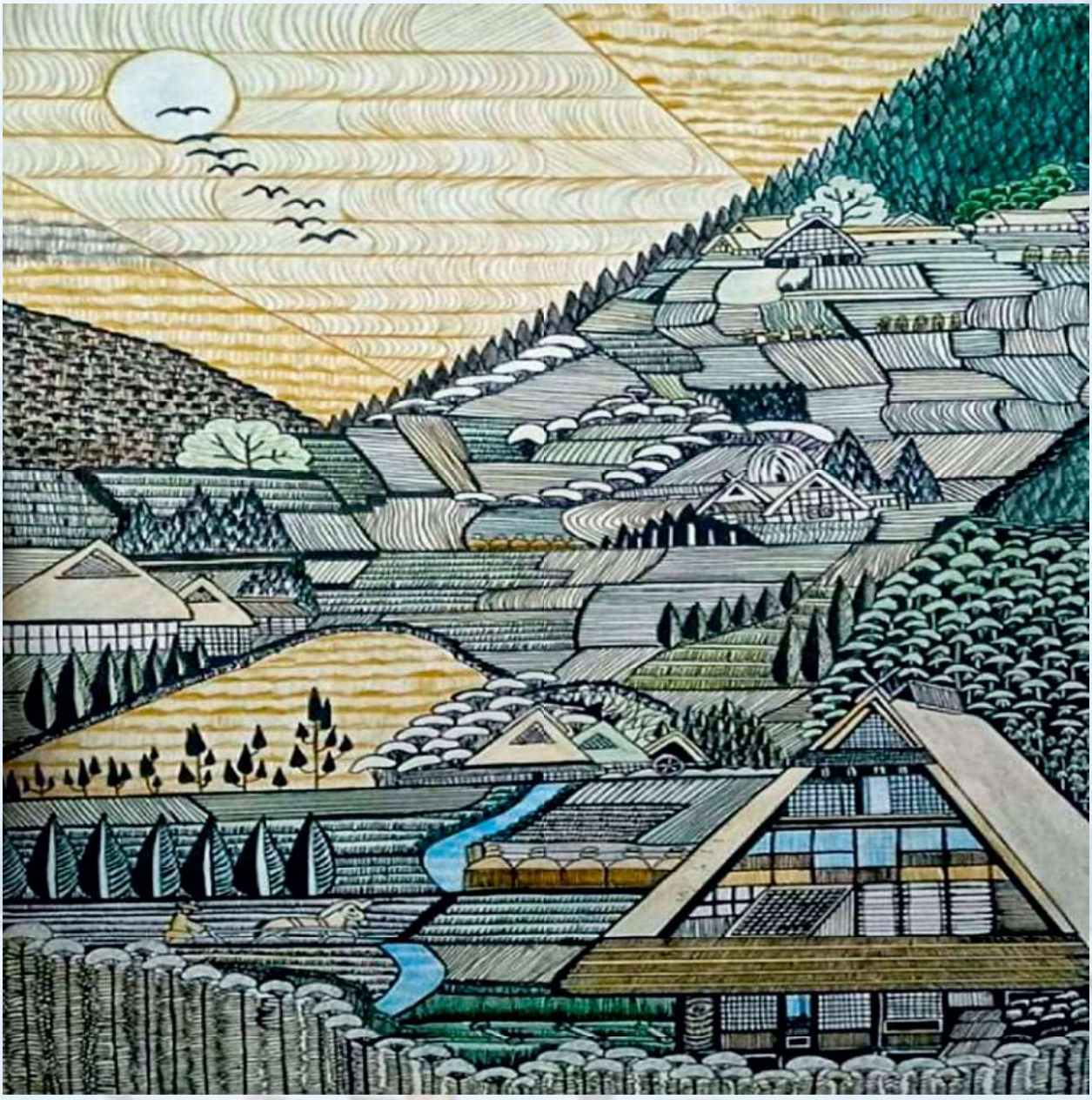
निलोफर तबस्सुम
वरिष्ठ लेखाकार

वायुमंडलीय प्रदूषण वह स्थिति है जिसमें किसी रासायनिक, भौतिक या जैविक तत्व द्वारा घर के अंदर या बाहर के वातावरण को दूषित किया जाता है, जिससे वायुमंडल के प्राकृतिक गुणों में परिवर्तन आ जाता है। वायुमंडलीय प्रदूषण के सामान्य स्रोत मोटर वाहन, औद्योगिक इकाइयाँ और जंगलों में लगने वाली आग हैं।

वायुमंडलीय प्रदूषण सभी चीजों को प्रभावित करता है। यह हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। यह वन्यजीवों, वनों और कृषि को नुकसान पहुँचाता है। यह जलवायु परिवर्तन का कारण बनता है, जो पूरे ग्रह को प्रभावित करता है।

हम विभिन्न उपायों द्वारा वायुमंडलीय प्रदूषण को रोक सकते हैं, जैसे कि ईंधन से चलने वाले वाहनों का कम उपयोग करना और उन्हें अच्छी स्थिति में रखना, इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग करना, कचरा जलाने से बचना, अधिक पेड़ लगाना, विद्युत उपकरणों का उपयोग करना और सभी औद्योगिक इकाइयों में प्रदूषण नियंत्रण उपकरण स्थापित करना आदि।







इशिता राठी सुपुत्री श्री पी.के. राठी, उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी) द्वारा निर्मित स्कैच

भाषा नही, पहचान हूँ मैं



पीयूष श्योराण

पुत्र श्री उदयभान सिंह, सहायक लेखा अधिकारी

मैं शब्द नहीं, भावना हूँ,
अभिव्यक्ति की पावन साधना हूँ।
लिपियों में जन्मी, स्वरों में ढली,
मैं संस्कृति की सांस, मैं परंपरा की कली।
मुझसे बनते हैं रिश्ते, मुझसे ही संवाद,
मैं जोड़ती हूँ दिलों को, मिटाती हूँ विवाद।
माँ की बोली में लोरी बनकर गूँजती हूँ,
कवि की कलम में कोमल भाव से ढलती हूँ।
मैं पहचान हूँ, केवल शब्द नहीं,
मैं इतिहास हूँ, केवल अर्थ नहीं।
हर बोली में छिपी है एक सभ्यता की धुन,
हर भाषा में बसती है आत्मा की गुन।
मुझमें है मातृभूमि की महक,
संस्कारों की चिरंतन लय।
मैं लोकगीतों की झंकार हूँ,
पीढ़ियों की जुबां पर अजय।
मैं समय की स्मृति हूँ, वर्तमान की ध्वनि,
भविष्य के स्वप्नों की मैं ही रागिनी।
यदि मैं खो जाऊँ, तो खो जाएगी पहचान,
संस्कृति रह जाएगी बिन स्वर, बिन गान।
मैं हिंदी हूँ, मेरी आवाज़ सजीव है,
मेरी बोली में इतिहास और भविष्य जीवित है।
मुझे सहेजो, मुझे अपनाओ,
भाषा नहीं, पहचान हूँ मैं – जीवित संस्कृति की अभिव्यक्ति हूँ मैं।

कितना कुछ सोचा था हमने
तुम्हारे आने से पहले



आशीष भदानी
लेखापरीक्षक

हम तुम्हारे लिए अपने घर को सजाएंगे।
अपने आंगन में फूलों की पंखुड़ियां बिछाएंगे।।
घर के द्वार पर रंगों से भरी रंगोली बनाएंगे।
अपने हाथों से तुम्हारे लिए मीठा पकाएंगे।।
और न जाने क्या क्या और कितना कितना?

हम तो फूलें न समा रहे थे।
अपनी ही कल्पनाओं में गुम हुए जा रहे थे।
कितनी सुंदर सी छवि बनी थी वह।
कितनी बार खुश हुई थी मैं उस राह।।

तुम्हारा आना जैसे कोई स्वप्न था।
रात के अंधेरे में बना कोई भ्रम था।।
तुम आए, आके चले गए।
हमारी सारी कल्पनाएं मृत पड़ी रही।।

तुम्हारा ऐसे आना और आकर ऐसे चले जाना
मुझे स्वीकार नही,
मेरी कल्पनाओं को देना होगा तुम्हें आकार अभी।।
आकर पूरे करने होंगे तुम्हें सारे स्वप्न,
तुम से है मेरा ये अधिकार यही।।

क्योंकि, तुम्हारा ऐसे आना और आकर ऐसे चले जाना
मुझे स्वीकार नही।

माँ की ममता



अंकित कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

आज माँ की ममता की मर्मस्पर्शी कहानी
कुदरत ने कुछ इस तरह से लिखवाई
बच्चों के भोजन की तलाश में
एक प्यारी चिड़िया रास्ता भटक गई
भटकते-भटकते वो दरिंदों की बस्ती में आ गई।
दरिंदे बोले! क्यों री बेहया, यहाँ क्या लेने आई है
बेचारी चिड़िया ने डरते-डरते कहा
मेरे बच्चे भूखे हैं खाना दे दो ऐ भाई
एक बे-गैरत दरिंदा बोला, भीख माँगते तुझे शर्म न आई।
खुद शिकारी के जाल में फँसने चली आई।
हम तुझे खाना देंगे पर बदले में क्या लेकर आई
चिड़िया ने कहा मेरे बच्चे भूखे हैं
कुछ तो रहम करो मेरे भाई।
इतनी दूर से मैं भटकती आई
दरिंदों ने उसकी एक न सुनी, वो खाने के लिए बहुत गिड़गिड़ाई
तभी कुछ दरिंदों ने उसे अपने शैतानी हाथों में जकड़ लिया
वो बेचारी फड़फड़ाई, खूब रोई और चिल्लाई

लेकिन कहीं से कोई मदद न आई।
पहले उसके पंखों को फाड़ा, फिर सबने उसकी काया नोच-नोच कर खाई
आस-पास के लोग बोले, चलो रे भाई
हम ऐसे झमेले में नहीं पड़ना।
ये तो निर्लज्ज हैं, सारी गलती इसी की है।
क्यों इस गंदी बस्ती में कलंकित होने आई
काफी समय बीत जाने के बाद, जब चिड़िया घर न आई
बच्चों ने सोचा कहाँ होगी माँ हमारी
आओ ढूंढने चलें, अब बहुत देर होने को आई
गिरते-पड़ते बच्चे उसी बस्ती में पहुँचे।
जहाँ उनकी माँ ने अपनी जान गंवाई।
सहमे बच्चों ने दरिंदों से पूछा, क्या हमारी माँ यहाँ पर आई
दरिंदे बोले हाँ! पर वो तुमसे प्यार नहीं करती
इसलिए तुम्हें अकेला छोड़कर यहाँ चली आई
हमसे खाना मांगा और खुद खाकर चली गई
एक बार भी उसे तुम्हारी याद न आई।
बेचारे बच्चे रोते हुए वापस अपन घर आ गए।
कहने लगे माँ तो हमसे हमेशा प्यार करती आई
हमेशा भूखा-बेसहारा छोड़ न जाने कहाँ चली गई।
वक्त गुजरता गया, काफी दिन बीत जाने के बाद,
जब माँ की कोई खबर न आई
बच्चों ने कहा जिस माँ ने साथ जीने की कसमें खाईं
वही हमें अकेला छोड़कर पता नहीं किस ओर चली गई
हम जी कर भी क्या करेंगे,
एक-एक करके फिर सबने अपनी-अपनी जान गंवाई
और माँ की ममता की कहानी यहीं खत्म हो गई।

फिक्र न करना पापा आपकी इज्जत नहीं घटेगी



रिंकी यादव
बहन देवव्रत, लेखाकार

मैं आ जाऊंगी इस दुनिया में एक प्यारी सी मुस्कान के साथ,
आँगन में भर दूँगी खुशियाँ, चहकेगा घर मेरी किलकारियों से दिन-रात,
''पापा मेरे सबसे पहले'', जिऊँगी इसी अरमान के साथ,
बेटी को जन्म दोगे देखना अलग ही शान बनेगी,
फिक्र न करना पापा आपकी इज्जत नहीं घटेगी।

पापा सबको स्कूल जाते देख मेरा भी मन करता है,
कहने वाले बहुत कहेंगें बेटे बिन कह सरता है,
ये भी बोलेंगे बेटी को कौर पढ़ाया-लिखाया करता है,
"पर पापा किसी की ना सुनना", अपनी बेटी पे भरोसा रखना,
स्कूल में भेजोगे बेटे से ज्यादा नाम कमाऊँगी,
फिर सारी दुनिया कहने की जगह, आपकी सुनेगी,
फिक्र न करना पापा आपकी इज्जत नहीं घटेगी।

पापा हाँ बड़ी हो गयी मैं आपके प्यार से, माँ के दुलार से,
अब दुनिया को भारी होने लगूँगी मैं।
लोगों से कर दो शादी लड़की की, हर गली कोने में सुनूँगी मैं,
पर पापा जैसे अब तक साथ निभाया आगे भी निभाना,

अभी आपका नाम और बड़ा करना अभी बाकी है,
डिग्रियाँ तो बहुत ले लीं, अभी प्रतियोगिता में उतरना बाकी है
आपकी बेटी कोई बड़ी हस्ती बनकर ही डटेगी,
फिक्र न करना पापा आपकी इज्जत नहीं घटेगी।

हाँ पापा आज तैयार हूँ दूसरे घर जाने को,
आपसे बढ़कर तो कोई हो नहीं सकता, पर हाँ तैयार हूँ दूसरी दुनियां अपनाने को,
पापा आँखे बंद कर किसी के भी हाथ मत पकड़ा देना,
समाज के नियम-कानून मैं नहीं जानती, पर जो मेरा भरोसा आप पर है.....
.....उसे सूली पर मत चढ़ा देना,
एक बार आकर पूछना कि बेटी बता तू क्या चाहती है तेरे मन में क्या है,
समाज का पता नहीं पर देखना मेरी नजरों में आपकी इज्जत बहुत बढ़ेगी,
फिक्र न करना पापा आपकी इज्जत नहीं घटेगी।
पापा आज हुई पराई पर दिल से जुदा मत करना,
याद आए मेरी तो थोड़ा संयम धरना।
हर जगह आपकी शान बढ़ाऊँगी, लायक पापा की लायक बेटी बन के दिखाऊँगी,
बस दुनिया में आने का मौका दो, हर बेटी की यही आवाज भी और यही रहेगी,



नासमझ

रिंकी यादव
बहन देवव्रत, लेखाकार

अपनी जिंदगी की किताब पर लिखूँ
तो खुद को नासमझ लिख दूँ।

खुद को नासमझ लिख दूँ।
सारी उम्र सपनों के पीछे भागना
और फिर सपने पूरे होने पर
रातों को करवटें बदल-बदल कर जागना
नासमझी ही तो है, नासमझी ही तो है।

पूरे बचपन बड़े होने पर
फिर उसी बचपन के लिए तरसना
नासमझी ही तो है, नासमझी ही तो है।
किसी चीज को टूट कर चाहना और फिर
पल-पल उसी चाहत पर पछताना
नासमझी ही तो है, नासमझी ही तो है।
सारी जवानी नौकरी के पीछे गंवाना
और फिर नौकरी लगने पर नौकरी करते-करते ही थक जाना
नासमझी ही तो है, नासमझी ही तो है।
अपनी जिंदगी की किताब पर लिखूँ
तो खुद को नासमझ लिख दूँ।
तो खुद को नासमझ लिख दूँ।

शीर्षक: जो शब्द नहीं बने



साहिल
लेखाकार

मैंने आज
एक वाक्य लिखने की कोशिश की
जो कभी बोला न गया हो,
पर हर किसी ने
उसे जीया हो।

वह वाक्य
काग़ज़ पर आते ही
डर गया,
शायद पहली बार
किसी अर्थ को
नाम मिल रहा था।

कुछ भाव ऐसे होते हैं
जो भाषा से पहले पैदा होते हैं,
और भाषा के बाद
मर जाते हैं।

मैंने देखा–
खामोशी भी थक जाती है
जब उसे

हर बात का भार
उठाना पड़ता है।

हम जिन शब्दों को
सच कहते हैं
असल में वे
समझौते होते हैं
भावनाओं और समाज के बीच।
कभी ध्यान देना–
सबसे सच्ची बातें
आँखें कहती हैं,
और सबसे झूठी बातें
बहुत सुंदर वाक्यों में लिखी जाती हैं।

मैंने आज
कोई कविता नहीं लिखी,
बस उन शब्दों को
चुप रहने दिया
जो अब तक
कविता बनने के इंतज़ार में थे।

तुम्हें देखता रहा



पंकज कुमार
लेखापरीक्षक

एक रात, एक सपना आया
हम थे किसी दूसरे ब्रह्मांड में।
न मनुष्य, न पशु,
न पक्षी, न कोई पेड़
फिर भी थे सजीव।

तुम सोचती होगी,
तो फिर क्या थे हम?
हम थे फूल,
तुम्हारे प्रिय फूल,
सूरजमुखी।

माना यथार्थ में
थोड़ी लंबी हो तुम मुझसे,
पर वहाँ,
तुम थी थोड़ी छोटी और मैं थोड़ा बड़ा।

हर रात
एक-दूसरे को देखते थे हम,

और हर रात
मैं बस तुम्हें निहारता रहता।

फिर एक रोज
भोर हुई, सूर्य उदित हुआ
पर कुछ अनोखा घटा।
मानो रात ठहर गई हो,
शिव का कंठ नील न हुआ हो,
चिनाब की धारा रुक गई हो,
शरद में चिनार ने रंग न बदला हो।

उस क्षण
मैं सूर्य को छोड़,
केवल तुम्हें देखता रहा।

उसी क्षण से
हर एक ब्रह्मांड में,
अनंतकाल तक,
मैं तुम्हें देखता रहा।

सपना या हक़ीक़त,
मैं तुम्हें देखता रहा
मैं हमेशा
केवल तुम्हें देखता रहा।



प्रेम की नई परिभाषा



कृष्ण कुमार
लेखापरीक्षक

तुम कहते हो मैं तंज कसता हूँ, तुम्हारी हालत देख तुम पर हंसता हूँ,

जैसे मैं एक बेहूदी हार हूँ, और तुम वो नसीब जो जीत को तरसता हो।

तुम कहते हो अब तुम याद नहीं मुझे, जैसे मैं कोई गुम मुसाफिर

और तुम एक छोटे मोहल्ले का सुनसान सा रस्ता हो।

तुम कहते हो मैं अब तुम्हे पहले सा प्रेम नहीं करता, मानो तुम कोई

खंडित मूर्ति और मैं पाखंडी पंडित जो उस मूर्ति को छूने से डरता हो।

लेकिन! मैं तुम्हारे लगाए हुए इन सब आरोपों को ठुकराता हूँ, पहले

तुम केवल मेरी नजरों के मेहमान थे,पर अब मैं तुम्हें हृदय में भी पाता हूँ।

तुम मेरे जहन में ही हो हर वक्त, और तुम्हारे लिए मेरा प्रेम पहले से भी सघन है,

मेरे नए प्रेम की परिभाषा में, आशीर्वाद सी छाया और सच सी अगन है।

क्या तुम्हें पता है इस प्रेम की आग कितनी तीक्ष्ण और बेरहम है ?

इससे बचना चाहो तो पीड़ा मिलेगी, और इसमें जल जाओ तो रहम है।

सच तो यह है कि हम सब एक सुंदर स्वर्ण पिंजरे में बंद है,

समाज, संयोग, शरीर, अतीत, रिश्ते, नाते आदि जिसके स्तंभ है।

मुझे मालूम है यह बात चुभने वाली है, और थोड़ी टेढ़ी है,

आखिर कैसे! हमारा अस्तित्व ही, हमारे पांव की बेड़ी है ?

थोड़ा कड़वा बोलूंगा, लेकिन इसको तंज मत समझना, कि

ये जो प्रेम तुमने समाज से सीखा है, वो महज एक प्रपंच है।

यह तुम्हारा प्रचलित प्रेम एकदम भिखमंगा है,

तुम दे भी दो इसे अपनी खाल उतार, तब भी पाओगे नंगा है।

सुख-सुविधा देख ये मत कह देना यह तो स्वर्ण सलाखों का प्यार है,

ठीक-ठीक देख लेना सच में प्यार है या कोई कर रहा व्यापार है।

कोशिश करना तुम पिंजरे को छोड़, आकाश से ही दिल जोड़ो,

और प्रेम की खातिर लड़ना पड़े, तो लड़ते- लड़ते ही दम तोड़ो।

मेरे प्रेम को तुम महज शरीर का बुखार मत समझना,

यह अनंत है, इसे नहीं आता आम प्रेम सा नोचना-कचोटना।

स्वतंत्र स्वभाव मेरे प्रेम की नई परिभाषा?

जिसमें ना कोई निर्भरता है, और ना ही किसी से आशा।

उम्मीद करता हूँ तुम्हारी नाराजगी मैं दूर कर पाया हूँ,

मेरी आँखों में बस आकाश है, और मैं आँखों देने आया हूं।

कृपया! करके मेरे प्रेम को अपनी सामाजिक दृष्टि में मत तोलना,

कौड़ी के भाव बिक जाएगा हीरा, और कौड़ी का तो कोई मोल ना।

नारी तू अभेद्य है



दीपक कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

नारी तू अभेद्य है,
तेरा न कोई आर न पार है।
तुझ पर पीढ़ियों का भार है,
तू ही सृष्टि का आधार है।

तू स्वयं शक्ति है,
आत्मनिर्भरता का पर्याय है।
तू अबला नहीं,
सशक्त और अजेय है।

तू माता, बहन, पुत्री और पत्नी है,
माता के रूप में तू स्वयं भगवान है।
पुरुषों के दुर्गम जंगली समाज में,
तेरा होना पुष्प समान है।

नारी तू ममता की मूरत,
तू पूजा तू आरती है।
प्रकृति के कण-कण में है
तू विश्व भारती है।

तू पापियों के पाप हरने वाली गंगा है,
समय पड़े तो काली का रूप है।

तू इंद्रलोक में बसने वाली रंभा है,
शिव का अर्धसत्य तू ही दुर्गा का स्वरूप है।

नारी तू सौंदर्य का प्रतीक है,
मखमल से भी कोमल है।
समय पड़े तो वज्र से भी कठोर है,
नारी तू अभेद्य है।

नारी तू नभ की ऊँचाई है,
तुझमें समुद्र की गहराई है।
तुझसे ही समस्त संसार का श्रृंगार है,
तुझमें ही मानवता का सार है।

नारी तू अभेद्य है,
तेरा न कोई आर न पार है।
तुझ पर पीढ़ियों का भार है,
तू ही सृष्टि का आधार है।



समय का पहिया



मसरत हसन
वरिष्ठ लेखाकार

चलता रहता समय का पहिया,
घूमे जैसे भाग्य का रथ,
कभी खुशी की धूप खिली है,
कभी बरसें दुख के मेघा अथ।
कल जो था वो आज नहीं है,
आज जो है, कल होगा कहाँ
हर पल में एक कहानी बसती
हर सांस में छिपा जहाँ।
बचपन बीता खेल-खिलौने में,
यौवन आया सपनों संग,
फिर जिम्मेदीर की आँधी आई
और जीवन बन गया रंग-बिरंग।
रूकता नहीं ये चक्र किसी के,
राजा, रंक सभी के साथ,
जो इसे समझ ले मुस्कुराकर,
उसी के जीवन में है प्रभात।
लो चलो हम भी चलते जाएँ,
हर पल को गले लगाएँ,
क्योंकि समय का पहिया कहता है,
थोड़ा ठहरो, फिर आगे बढ़ जाएँ।

उम्मीद का सूरज



प्रतीक कुमार यादव
लेखाकार

गाँव की सुबहें शहर की सुबहों जैसी नहीं होतीं।
यहाँ सूरज धीरे-धीरे उगता है,
जैसे किसी बूढ़े ने अपनी झुर्रियों से आसमान को सहलाया हो।
नीम के पेड़ के नीचे एक पुराना घर था –
जिसके सामने एक लकड़ी की कुर्सी रखी रहती थी।
हर सुबह उस कुर्सी पर बैठा दिखता था *रामदीन* –
शांत, स्थिर, और जैसे हर दिन कुछ खोज रहा हो उस रोशनी में।

गाँव वाले कहते,
"बाबा रोज सूरज से बातें करते हैं।"
रामदीन बस मुस्कराते और कहते –

"सूरज से नहीं बेटा, खुद से बात करता हूँ।
सूरज तो बस सुन लेता है।"

एक सुबह शहर से एक लड़की उस गाँव में आई – राधा।
उसकी आँखों में थकावट थी,
मन में बेचैनी और दिल में हार।
वो सब कुछ छोड़कर आई थी –
नौकरी, दोस्त, रिश्ते, यहाँ तक कि खुद से उम्मीद भी।

पहली सुबह जब वो नीम के नीचे से गुज़री,
उसने देखा –

एक बूढ़ा आदमी सूरज को ऐसे देख रहा था
जैसे किसी खोए हुए दोस्त का इंतज़ार कर रहा हो।

वो बोली –
“हर दिन सूरज को देखने से क्या मिलता है?”
रामदीन मुस्कराए,

“कुछ नहीं... बस मन को याद दिलाता हूँ कि वो अब भी आता है।”
“अगर कल न आए तो?” उसने तंज से पूछा।
“तो कम से कम आज तो आया न,”
उन्होंने शांत स्वर में कहा।

राधा ने कंधे उचकाए और चल दी,
पर पता नहीं क्यों, उस जवाब ने उसके भीतर कोई हलचल कर दी थी।
रात को जब उसने आसमान देखा,
तो लगा जैसे वही सवाल उसके भीतर गूँज रहा हो –
“अगर कल न आए तो?”

अगले दिन उसने फिर रामदीन को देखा।
अबकी बार वो कुर्सी के पास जाकर बैठ गई।
“आप रोज़ ऐसा क्यों करते हैं?”

“इंतज़ार करता हूँ,” उन्होंने कहा।
“किसका?”
“अपने बेटे का। शहर गया था काम की तलाश में।
बोला था ‘जल्दी लौटूँगा’। तब से हर दिन देखता हूँ सूरज –
शायद किसी दिन उसी के साथ लौटे।”

राधा चुप हो गई।
वो नहीं जानती थी कि किसे ज़्यादा दुख हुआ –
रामदीन के इंतज़ार को देखकर या
अपने भीतर की खोई उम्मीद को महसूस करके।

धीरे-धीरे दोनों की मुलाक़ातें रोज़ की आदत बन गईं।
राधा अब सुबह उसी नीम के पेड़ के नीचे बैठती,

कभी चाय लेकर आती, कभी बस खामोशी से बैठ जाती।
कभी रामदीन बोलते,
कभी सिर्फ हवा बोलती।

एक दिन राधा ने पूछा,
"बाबा, आपको नहीं लगता उम्मीद इंसान को तोड़ देती है?"
रामदीन ने मुस्कुराकर कहा,

"बिल्कुल तोड़ती है...
पर बेटी, जो चीज़ हमें जिंदा रखती है,
वही हमें कभी-कभी तोड़ भी देती है।"

राधा ने नीचे देखा।
वो जवाब नहीं दे सकी।

दिन बीतते गए।
अब राधा खुद भी सूरज देखने लगी।
पहले बस दिखावे में,
फिर धीरे-धीरे उसे उस सुबह की रोशनी में कुछ सुकून मिलने लगा।
जैसे कोई अनकही बात रोज थोड़ी सी साफ हो रही हो।

रामदीन की तबियत अब पहले जैसी नहीं थी।
वो ज्यादा बोलते नहीं, बस मुस्कुराते रहते।
राधा को लगता –
वो आदमी जैसे भीतर से किसी और दुनिया में जी रहा है,
जहाँ उम्मीदें बोझ नहीं, बस सांसें हैं।

एक दिन राधा ने धीरे से कहा,
"बाबा, अगर सूरज आज बादलों में छिप जाए तो?"
रामदीन ने मुस्कुराकर उत्तर दिया –

"तो क्या हुआ बेटी, वो वहीं होगा...
बस हमें नहीं दिखेगा।
जैसे उम्मीद... वो भी कभी-कभी छिप जाती है।"

राधा की आँखों में आँसू थे।
वो जानती थी – बाबा की बातें अब आखिरी दिनों जैसी लग रही थीं।

एक सुबह, नीम के नीचे सन्नाटा था।
राधा जल्दी पहुँची –
रामदीन पहले से बैठे थे,
पर चेहरा कुछ और ही शांति से भरा था।

वो बोली,
"बाबा, आज तो आसमान बिल्कुल साफ है।"
रामदीन ने उसकी ओर देखा,
हल्की मुस्कान के साथ कहा –

"हाँ बेटी, आज सूरज जरूर दिखेगा...
बस आखिरी बार देखना है।"

राधा ने उनका हाथ थाम लिया।
आसमान में सुनहरी किरणें फैल रहीं थीं,
और जब पहली रोशनी उनके चेहरे पर पड़ी,
रामदीन की साँसें धीरे-धीरे थम गईं।

सूरज निकल आया था।

कई हफ्तों बाद, राधा शहर लौटी।
अब वो पहले जैसी नहीं रही थी।
उसकी चाल में वही ठहराव था,
जो कभी रामदीन की मुस्कान में था।

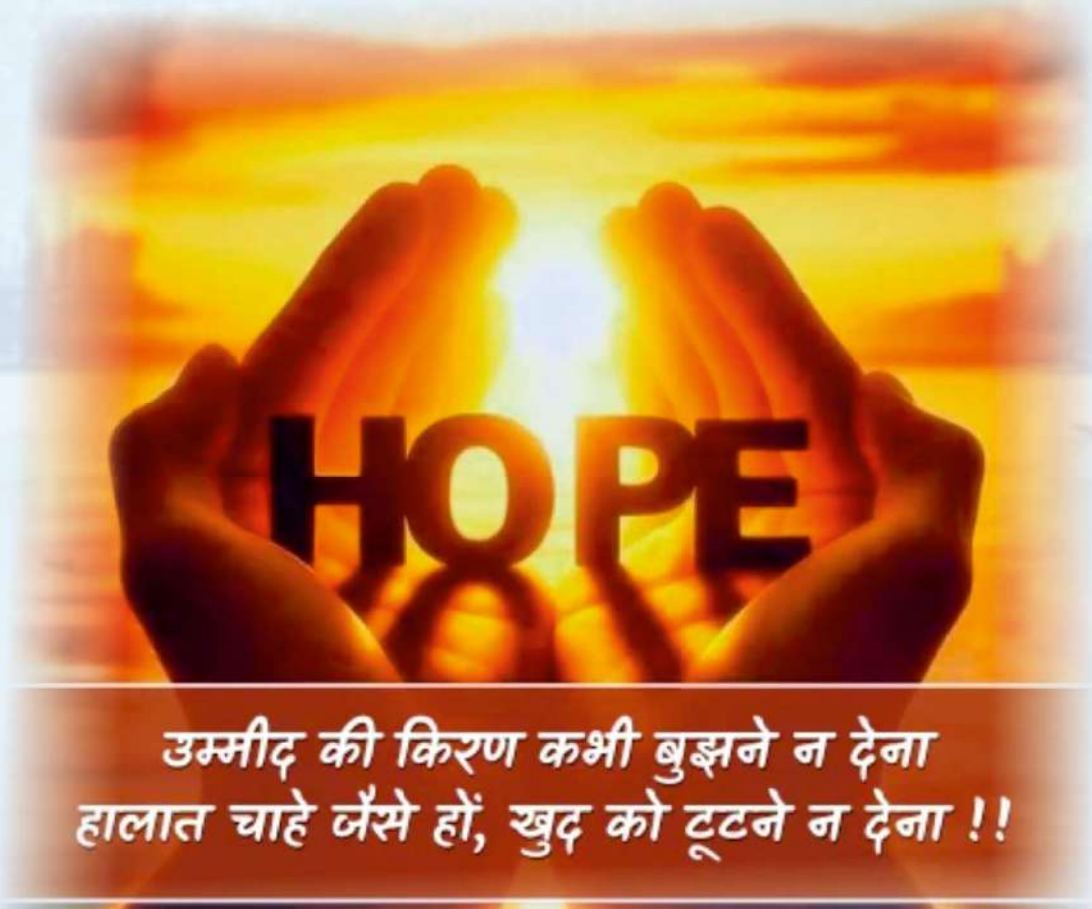
उसने अपने अधूरे प्रोजेक्ट को फिर से शुरू किया –
नाम रखा – "सूरज की खिड़की।"
उसका उद्देश्य था –
लोगों को याद दिलाना कि हर दिन एक नया दिन होता है,
भले ही कल ने सब कुछ तोड़ दिया हो।

कभी-कभी वो बालकनी में बैठती,
सूरज को देखती,
और हवा में वही आवाज़ सुनाई देती –

“हर दिन नहीं बेटी, कुछ दिन हम उसे देख नहीं पाते...”

वो हल्के से मुस्कुराती,
आँखों से आँसू पोंछती,
और कहती –

“देख रही हूँ बाबा... आज सूरज सच में बहुत सुंदर है।”



प्यार की नजरों से



बलजीत सिंह
सहायक पर्यवेक्षक

प्यार की कोई हद नहीं, कोई सीमा नहीं,

ये दिल की एक सच्ची, अनकही ख्वाहिश है।

जब तुम पास होते हो, दिल में एक अहसास है,

जैसे पूरा आसमान, तुम्हारे नाम का ख्वाब है।

तुमसे मिलने के बाद, दुनिया बदल सी गई,

खुशियों का मौसम, दिल में पंख लग गया।

तुम्हारी हर बात, जैसे दिल को छू जाए,

प्यार में हर पल, जैसे एक नई राह दिख जाए।

नहीं चाहिए कुछ और, सिर्फ तुम्हारा साथ।

साथ चलें हम, छू लें अपनी सारी आसमान की बात,

प्यार की सबसे प्यारी भाषा यही है,

दिल से दिल और सच्चाई से सच्चाई जुड़ी रहती है।

चाहे मौसम हो, चाहे समय बदल जाए,

मेरा प्यार तुम्हारे लिए कभी घट न पाए।

जिंदगी के सफर में, तुम हो मेरी वजह,

तेरे बिना सब कुछ अधूरा, क्योंकि तुम हो मेरा प्यार।

प्रकृति की गोद में

बलजीत सिंह,
सहायक पर्यवेक्षक

सूरज की किरणें जब बिछें धरती पर,

फूलों की मुस्कान छिपे उस पर।

हरियाली से महके वातावरण,

प्रकृति ने किया सजा हर कदम।

नदियाँ बहती हैं, गाती हुई धुन,

पक्षी उड़ते हैं, जैसे हो कोई चुन।

हर एक पेड़-पौधा बोलता है कहानी,

प्रकृति की छांव में सब है सयानी।

बादल हो या हवाएँ, सब कुछ है प्यारा,

सुरम्य रंगो से जग को सजाना।

आओ प्रकृति से जुड़ें, इसका साथ निभाएँ।

हम सभी मिलकर इसे बचाएँ।

प्रकृति का महत्व समझो, इसे न नष्ट करो।

जो कुछ भी हमें दिया है, उसे संजो कर रखो।

हर तत्व की रक्षा में योगदान दो,

तभी हमारा भविष्य सुरक्षित होगा, यह याद रखो।

कविता



उदयभान सिंह
सहायक लेखा अधिकारी

सवेरा

धूप की पहली किरण आई,
अंधेरों से लड़कर मुस्काई।
पत्तों पर मोती से ओस,
हर पल में छिपा है कोई जोश।
चिड़ियों की चहक, हवा की बात,
हर सुबह लाती है नई सौगात।
उठो, चलो फिर से कुछ कर दिखाओ,
हर सवेरा कहता है मत घबराओ।

तेरा नाम

तेरा नाम लहरों सा बहता है,
हर साँस में धीरे से कहता है।
चाँदनी रातों में तुझसे मिलना,
जैसे ख्वाबों में खुद को पाना।
तेरे बिना सब अधूरा लगता है,
हर रंग फीका, हर पल सन्नाटा है।
तेरा नाम ही मेरी कविता है,
तेरा नाम ही मेरी दुनिया है।

आत्मबल

मैं वो चिंगारी हूँ जो बुझती नहीं,

हर आँधी से लड़ती, झुकती नहीं।

मेरे पंखों में है तूफान की उड़ान,

मैं हूँ अपनी ही पहचान।

जो कहे तू नहीं कर सकता,

उन्हें दिखा दूँ- मैं कर सकता हूँ।

मैं हूँ, मैं रहूँगा, मैं बढ़ता रहूँ,

हर मुश्किल से लड़ता रहूँ।

दोस्ती का रंग

दोस्ती कोई सौदा नहीं, एहसासों की बात है,

हर मोड़ पर साथ चलें, ये दिल की सौगात है।

न नाम चाहिए न कोई पहचान,

बस एक मुस्कान में छिपा है सारा जहान।

जब दुनिया रूठे या साथ निभाए,

गमों की बारिश में भी हँसी बरसाए।

कभी खामोशी में भी सब कुछ कह जाती है,

कभी एक झप्पी में जिंदगी महक जाती है।

सच्चा दोस्त वो जो बिना कहे समझे,

हर दर्द को अपनी मुस्कान से सहे।

चलो आज उस दोस्त को याद करें,

जिसने हमें खुद से भी ज्यादा प्यार किया हर पल।

जिला मुख्यालय, बांदीपोरा में आयोजित पेंशन अदालत

जिला, बांदीपोरा में पेंशन मामलों व उनके भुगतान पर पेंशनभोगियों, डीडीओ, पीएसए और राजकोष अधिकारियों की जागरूकता हेतु दिनांक को 08.09.2025 पेंशन अदालत का आयोजन किया गया। पेंशनभोगियों एवं आगामी छह माह से कम समय में सेवानिवृत्त होने वाले सरकारी कर्मचारियों, जिला राजकोष अधिकारी बांदीपोरा और अन्य अधिकारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

उप महालेखाकार महोदय द्वारा उद्घाटन भाषण में पेंशन अदालतों के आयोजन और आउटरीच कार्यक्रमों की महत्वपूर्णता का उल्लेख करते हुए कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। इसके पश्चात श्री कुलदीप वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा पेंशन और परिवार पेंशन मामले तैयार करने और इन मामलों को तैयार करते समय आवश्यक जांच बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए एक पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन दी गई, जो इन पेंशन मामलों को समय पर निपटाने में सहायक होगी।

प्रेजेंटेशन सत्र के पश्चात डीडीओ, टीओ, पेंशनभोगियों और परिवार पेंशनभोगियों के सवालों के जवाब दिए गए। प्रतिभागियों को ऑनलाइन पेंशन मामले की प्रोसेसिंग के लिए नए लॉन्च हुए पेंशन सुविधा पोर्टल के बारे में बताने के लिए एक सामान्य जागरूकता सत्र का भी आयोजन



किया गया तथा डिजी लॉकर से डिजिटल अथॉरिटीज डाउनलोड करने की प्रक्रिया के बारे में भी बताया गया।

पेंशनभोगियों से कुछ अभ्यावेदन शिकायतें/भी प्राप्त हुई जिनमें से अधिकतर शिकायतों का समाधान टीम द्वारा मौके पर ही कर दिया गया।

सभी प्रतिभागियों द्वारा पेंशन मामलों के निपटान के लिए प्रधान महालेखाकार कार्यालय के प्रयासों की प्रशंसा की गई।





जिला मुख्यालय, रियासी में पेंशन अदालत

जिला मुख्यालय, रियासी में पेंशन मामलों व उनके भुगतान पर पेंशनभोगियों, डीडीओ, पीएसए और राजकोष अधिकारियों की जागरूकता हेतु दिनांक 07.10.2025 को पेंशन अदालत का आयोजन किया गया।

उप महालेखाकार/पेंशन द्वारा कार्यक्रम का उदघाटन किया गया। श्री पंकज सैनी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा पेंशन और परिवार पेंशन मामले तैयार करने और इन मामलों को तैयार करते समय आवश्यक जांच बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए एक पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन दी गई, जो इन पेंशन मामलों को समय पर निपटाने में मददगार होगी।

पेंशनभोगियों से कुछ अभ्यावेदन शिकायतें/भी प्राप्त हुई जिनमें से अधिकतर शिकायतों का समाधान टीम द्वारा मौके पर ही कर दिया।





जिला मुख्यालय, अनंतनाग में आयोजित पेंशन अदालत

अनंतनाग में दिनांक 28.10.2025 को पेंशन मामलों व उनके भुगतान पर पेंशनभोगियों, डीडीओ, पीएसए और राजकोष अधिकारियों की जागरूकता हेतु पेंशन अदालत का आयोजन किया गया। पेंशनभोगियों तथा आगामी छह माह से कम समय में सेवानिवृत्त होने वाले सरकारी कर्मचारियों, जिला राजकोष अधिकारी अनंतनाग और अन्य अधिकारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा कार्यक्रम का उदघाटन किया गया तथा उन्होंने अपने भाषण में पेंशन अदालतों के आयोजन और आउटरीच कार्यक्रमों की महत्वपूर्णता का उल्लेख किया। इसके पश्चात श्री नजीर अहमद पीरजादा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा पेंशन और परिवार पेंशन मामले तैयार करने और इन मामलों को तैयार करते समय आवश्यक जांच बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए एक पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन दी गई, जो पेंशन मामलों को समय पर निपटाने में मददगार होगी।

कार्यक्रम में लगभग 250 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रतिभागियों को ऑनलाइन पेंशन मामलों की प्रोसेसिंग के लिए नए लॉन्च हुए पेंशन सुविधा पोर्टल के बारे में जानकारी देने के लिए एक सामान्य जागरूकता सत्र का भी आयोजन किया गया तथा डिजी लॉकर से डिजिटल अथॉरिटीज डाउनलोड करने की प्रक्रिया के बारे में भी बताया गया।

पेंशन मामलों के निपटान के लिए प्रधान महालेखाकार कार्यालय के प्रयासों की सभी प्रतिभागियों द्वारा सराहना की गई।




KNS
PUBLIC FIRST
UPI
NEWS
SERVICE
JK



'चिनार ध्वनि' के पंचम अंक का विमोचन





कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), श्रीनगर में वर्ष 2025-26 के दौरान सेवानिवृत्त कार्मिकों की सूची

क्रं. सं.	नाम (श्री/श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	गुलाम नबी शोरा	पर्यवेक्षक	30.04.2025
2.	रियाज अहमद भट्ट	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2025
3.	मोहम्मद रफीक वानी	सहायक पर्यवेक्षक	30.04.2025
4.	मुबारक अहमद वानी	सहायक पर्यवेक्षक	30.04.2025
5.	महजबीन अख्तर	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2025
6.	गुरनैन सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2025
7.	नीलम यूसुफ	पर्यवेक्षक	31.05.2025
8.	अतिका बानू	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2025
9.	मोहम्मद इशाक शेख	सहायक पर्यवेक्षक	31.08.2025
10.	रूबिया जान	वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2025
11.	एजाज अहमद	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.11.2025
12.	गुलाम मोहम्मद मीर	वरिष्ठ लेखाकार	31.01.2026
13.	रिफत उल निसा कादरी	सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2026
14.	तारिक अहमद लोन	वरिष्ठ लेखाकार	28.02.2026
15.	गुलाम परवीन	वरिष्ठ लेखाकार	28.02.2026
16.	खुर्शीद अहमद	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.03.2026
17.	मोहम्मद फारूक भट्ट	वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2026
18.	फयाज अहमद शेख	वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2026
19.	मेहराज उद्दीन भट्ट	वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2026

(कार्यालय के उपर्युक्त साथियों को सेवानिवृत होने पर चिनार ध्वनि परिवार की ओर से उनके स्वस्थ जीवन एवं दीर्घायु होने की शुभकामनाएं)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) श्रीनगर में वर्ष 2025-26 के दौरान सेवानिवृत्त कार्मिकों की सूची

क्रं. सं.	नाम (श्री/श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
01	शबीर अहमद शाकाकुल	पर्यवेक्षक	30.04.2025
02	आमिना शाहीन	सहायक पर्यवेक्षक	30.04.2025
03	अब्दुल गनी हजाम	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2025
04	मोहम्मद अयूब बजाज	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2025
05	बिलक़ीस बानो	सहायक पर्यवेक्षक	31.12.2025
06	फ़ैयाज़ अहमद धोबी	सहायक पर्यवेक्षक	31.01.2026
07	नूर मोहम्मद गनई	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	28.02.2026
08	बशीर अहमद मीर	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2026
09	फारूक अहमद शाह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2026
10	खालिद परवेज़	पर्यवेक्षक	31.03.2026
11	मेहराज-उद-दीन मीर	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2026
12	मोहम्मद शफी खान	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2026
13	रफीक अहमद मीर	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2026
14	रफीक अहमद रेशी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2026
15	सज्जाद अहमद भट	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2026

(कार्यालय के उपर्युक्त साथियों को सेवानिवृत होने पर चिनार ध्वनि परिवार की ओर से उनके स्वस्थ जीवन एवं दीर्घायु होने की शुभकामनाएं)

हिंदी पखवाड़ा-2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की कुछ झलकियां





ऑडिट दिवस-2025 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), श्रीनगर के समन्वय से कार्यालय के सभागार कक्ष में आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते हुए नराकास, श्रीनगर के विभिन्न सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागी एवं नराकास, श्रीनगर के अधिकारियों का स्वागत करते हुए उप महालेखाकार/प्रशासन






AUDIT DIWAS


ऑडिट दिवस
AUDIT DIWAS

नराकास, श्रीनगर द्वारा आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री प्रतीक कुमार यादव, लेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)



हिंदी पखवाड़ा-2025 के समापन समारोह की कुछ झलकियाँ






कार्यालय प्रधान महालेखाकार
जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर
हिंदी पखवाड़ा
दिनांक 14 सितम्बर 2025 से दिनांक 30 सितम्बर 2025 तक
Roland XPS-30


हिंदी पखवाड़ा





उत्तरी क्षेत्र आईएएंडएडी फुटबॉल टूर्नामेंट की महालेखाकार जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर की विजेता टीम





कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) में हिंदी पखवाड़ा-2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

क्रं. सं.	प्रतियोगिता	श्रेणी	विजेताओं का नाम सर्व श्री/श्रीमती/कुमारी	पदनाम	परिणाम
1.	**निबंध लेखन प्रतियोगिता**	**हिंदी भाषी**	नीरज जांगिड़	लेखाकार	प्रथम
			यशवंत कुमार गुप्ता	लेखाकार	द्वितीय
			संतोष कुमार	लेखाकार	तृतीय
			अनूप कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	सांत्वना
		हिंदीतर भाषी	मनमोहन कौर	वरिष्ठ लेखाकार	प्रथम
			नीलोफर तबस्सुम	वरिष्ठ लेखाकार	द्वितीय
			रूकया रसूल	लेखाकार	तृतीय
			साकिब रौफ	एमटीएस	सांत्वना
2.	**टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता**	**हिंदी भाषी**	देवव्रत	लेखाकार	प्रथम
			अनुराग	लेखाकार	द्वितीय
			सौरभ कुमार	लेखाकार	तृतीय
			उदयभान सिंह	सहायक लेखा अधिकारी	सांत्वना
		हिंदीतर भाषी	एजाज अहमद	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	प्रथम
			शेख शफात हुसैन	सहायक पर्यवेक्षक	द्वितीय
			नीलोफर तबस्सुम	वरिष्ठ लेखाकार	तृतीय
			अयाजदीन शाला	वरिष्ठ लेखाकार	सांत्वना
3.	**श्रुतलेखन प्रतियोगिता**	**हिंदी भाषी**	प्रतीक कुमार यादव	लेखाकार	प्रथम
			प्रवेश डागर	लेखाकार	द्वितीय
			हर्षित सोनी	लेखाकार	तृतीय
			अनूप कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	सांत्वना
			भद्र बहादुर राना	वरिष्ठ लेखाकार	प्रथम

		हिंदीतर भाषी	मसरत हसन	वरिष्ठ लेखाकार	द्वितीय
			रिहाना अदफर	वरिष्ठ लेखाकार	तृतीय
			साकिब रौफ	एमटीएस	सांत्वना
4.	**प्रश्नोत्तरी प्रतियागिता**	**हिंदी भाषी**	उदय भान सिंह	सहायक लेखा अधिकारी	प्रथम
			विशेषांक प्रताप सिंह	लेखाकार	द्वितीय
			विकास थपलियाल	लेखाकार	तृतीय
			दीपक सिंघल	सहायक लेखा अधिकारी	सांत्वना
		हिंदीतर भाषी	मोहम्मद हुसैन डार	लेखाकार	प्रथम
			सुहीला	लेखाकार	द्वितीय
			जाविद खान	वरिष्ठ लेखाकार	तृतीय
			ओजैर अहमद भट	वरिष्ठ लेखाकार	सांत्वना
5.	**हिंदी वाचन प्रतियोगिता**	**हिंदीतर भाषी**	एजाज अहमद	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	प्रथम
			नजीर अहमद पीरजादा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	द्वितीय
			रिहाना अदफर	वरिष्ठ लेखाकार	तृतीय
			बलजीत सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	सांत्वना
6.	**चित्र देखकर कहानी लेखन प्रतियोगिता**	**हिंदी भाषी**	अन्नु राज	सहायक लेखा अधिकारी	प्रथम
			विवेक मेहता	लेखाकार	द्वितीय
			समरेश बहादुर	सहायक लेखा अधिकारी	तृतीय
			विशेषाँक प्रताप सिंह	लेखाकार	सांत्वना
		हिंदीतर भाषी	जोगिंद्र पाल बिरदी	पर्यवेक्षक	प्रथम
			मोहम्मद अमीन चांनसाज	सहायक पर्यवेक्षक	द्वितीय
			इशफाक अमहद जनवारी	वरिष्ठ लेखाकार	तृतीय
			भद्र बहादुर राना	वरिष्ठ लेखाकार	सांत्वना

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) में हिंदी पखवाड़ा-2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	विजेताओं के नाम एवं पदनाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)/	पुरस्कार
01	**श्रुत लेखन (हिंदी भाषी हेतु)**	विनय भालोठिया, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रथम
		राजकुमार गोदारा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	द्वितीय
		विशाल नागर, लेखापरीक्षक	तृतीय
	श्रुत लेखन (हिंदीत्तर भाषी हेतु)	सरबजोत सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रथम
		नीलोफर पंडित, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी	द्वितीय
		मंजूर अहमद गनई, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	तृतीय
02	**निबंध (हिंदी भाषी हेतु)**	अमित कुमार-I, लेखापरीक्षक	प्रथम
		दिलखुश, डीईओ	द्वितीय
		सागर कुमार, लेखापरीक्षक	तृतीय
	निबंध (हिंदीत्तर भाषी हेतु)	रोहित पेनुमला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रथम
		सरबजोत सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	द्वितीय
		नीलोफर पंडित, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी	तृतीय
03	**भाषण (हिंदी भाषी हेतु)**	अनुज जांगिड़, लेखापरीक्षक	प्रथम
		विपुल चौहान, लेखापरीक्षक	द्वितीय
		दिलखुश, डीईओ	तृतीय
	भाषण (हिंदीत्तर भाषी हेतु)	जावेद अहमद वानी, वरि. लेखापरीक्षक	प्रथम
		मंजूर अहमद नजार, वरि. लेखापरीक्षक	द्वितीय
		जहूर अहमद पर्रे, लेखापरीक्षक	तृतीय
04	**पत्र (हिंदी भाषी हेतु)**	कृष्ण कुमार, लेखापरीक्षक	प्रथम
		विशाल नागर, लेखापरीक्षक	द्वितीय
		अमित कुमार-I, लेखापरीक्षक	तृतीय
	पत्र (हिंदीत्तर भाषी हेतु)	जावेद अहमद वानी, वरि. लेखापरीक्षक	प्रथम
		सरबजोत सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	द्वितीय
		मंजूर अहमद नजार, वरि. लेखापरीक्षक	तृतीय

05	**वाचन (हिंदीत्तर भाषी हेतु)**	नीलोफर पंडित, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रथम
		रोहित पेनुमला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	द्वितीय
		जहूर अहमद पर्रे, लेखापरीक्षक	तृतीय
06	**टिप्पण लेखन (हिंदी भाषी हेतु**	विनय भालोठिया, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रथम
		विशाल नागर, लेखापरीक्षक	द्वितीय
		योगेश कुमार, लेखापरीक्षक	तृतीय
	टिप्पण लेखन (हिंदीत्तर भाषी हेतु)	जावेद अहमद वानी, वरि. लेखापरीक्षक	प्रथम
		रोहित पेनुमला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	द्वितीय
		मंजूर अहमद नजार, वरि. लेखापरीक्षक	तृतीय

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

1. राजभाषा अधिनियम,1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें व सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में, अंग्रेजी और हिंदी, दोनों में जारी किए जाएं । राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अंतर्गत ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का दायित्व यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार, निष्पादित अथवा जारी किए जाएं ।

2. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना है।

3. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अनुसार केंद्र सरकार के जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत कार्मिकों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएं। इसके अंतर्गत अधिसूचित बैंकों की शाखाओं में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाएं:-

"ग्राहकों द्वारा हिंदी में भरे गए आवेदनों और अंग्रेजी में भरे गए आवेदनों पर ग्राहकों की सहमति से जारी किए जाने वाले मांग ड्राफ्ट, भुगतान आदेश, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, सभी प्रकार की सूचियां, विवरणियां, सावधि जमा रसीदें, चैक बुक संबंधी पत्रादि, दैनिक बही, मस्टररोल, प्रेषण बही, पास बुक, लॉग बुक में प्रविष्टियां, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सुरक्षा एवं ग्राहक सेवा संबंधी कार्य, नये खाते खोलना, लिफाफों पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निर्माण अग्रिम, चिकित्सा संबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची, कार्यवृत्त आदि ।"

4. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अनुसार केंद्र सरकार, ऐसे अधिसूचित कार्यालयों के हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को टिप्पण, प्रारुपण और अन्य उन शासकीय कार्यों को केवल हिंदी में करने के लिए आदेश जारी कर सकती है, जो कि आदेश में विनिर्दिष्ट हों।

5. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा। केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे। केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी और मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी। तदनुसार, केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा है कि वे सभी मैनुअल, संहिताएं एवं प्रक्रिया संबंधी असांविधिक साहित्य से संबंधित अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य अनुवाद के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में भेजें।

6. राजभाषा नियम,1976 के नियम 12 के अनुसार केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियमावली के प्रावधानों तथा इनके अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो तथा इस प्रयोजन से उपयुक्त एवं प्रभावकारी जांच बिंदु बनाए जाएं।

7. केंद्रीय हिंदी समिति की 32वीं बैठक माननीय गृह मंत्री जी की अध्यक्षता में दिनांक 04 नवंबर 2024 को नई दिल्ली में हुई। बैठक में माननीय गृह मंत्री जी ने मुख्य रूप से निम्नलिखित सुझाव दिए-

(क) विज्ञान, न्यायालय, शिक्षा, प्रशासनिक, सामान्य बोल चाल की भाषा की सारी शब्दावलियों को शब्द सिंधु में समाहित करके शब्द सिंधु को सम्पूर्ण करना है।

(ख) दो महत्वपूर्ण कार्य किए जाने हैं। पहला हिन्दी के साहित्य और इसकी समस्त विधाओं को सुदृढ़ करना एवं उनको संजोना है। दूसरा भाषा के व्याकरण को सुदृढ़ करने के लिए भी दीर्घकालिक रणनीति बनाने की आवश्यकता है।

8. राजभाषा विभाग ने भारत सरकार के सभी सचिवों/विभिन्न सरकारी संगठनों के प्रमुखों से आग्रह किया है कि जब वे प्रत्येक माह वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक की अध्यक्षता करें तो वे उनमें हिंदी में सरकारी काम-काज में हुई प्रगति की भी समीक्षा करें और अपने संगठन में राजभाषा अधिनियम तथा नियमों के विभिन्न उपबंधों के कार्यान्वयन के बारे में चर्चा करें। साथ ही, संयुक्त सचिव (प्रशासन)/संगठन के प्रशासनिक प्रमुख को हिंदी कार्यान्वयन तथा वर्ष की प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करने का उत्तरदायित्व सौंपा जाए।

9. कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा का संवर्ग गठित होना चाहिए, जो कि कुल पदों के अनुरूप हो ।

10. मंत्रालयों/विभागों के अधीनस्थ कार्यालयों के हिंदी पदाधिकारियों को केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के समान वेतनमान व पदनाम दिए जाएं।

11. अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्न-पत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्न- पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए और ऐसे प्रश्न-पत्र द्विभाषी रूप से, हिंदी तथा अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएं। साक्षात्कार या मौखिक परीक्षा में उम्मीदवारों को हिंदी में उत्तर देने की छूट दी जाए।

12. केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा सभी सेवाकालीन, विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं (अखिल भारतीय स्तर पर परीक्षाओं सहित) में अभ्यर्थियों को प्रश्न पत्रों के उत्तर हिंदी में देने का विकल्प दिया जाए। प्रश्न पत्र अनिवार्यतः दोनों भाषाओं, हिंदी और अंग्रेजी में तैयार कराए जाएं। जहां साक्षात्कार लिया जाना हो, वहां अभ्यर्थियों को पूछे गए प्रश्नों का उत्तर हिंदी में देने की अनुमति दी जाए।

13. सभी प्रकार की वैज्ञानिक/तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में वैज्ञानिकों आदि को राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध पत्र संबंधित मंत्रालय/विभाग और कार्यालय आदि के मुख्य विषय से संबंधित हों।

14. केंद्रीय सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि हिंदी संगोष्ठियों का आयोजन करें।

15. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में सभी प्रकार का प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सामान्यत: हिंदी माध्यम से हो । 'ग' क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जाए और प्रशिक्षणार्थी की मांग के अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए।

16. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा कोई भी गैर-सरकारी संस्था केंद्र सरकार के कर्मचारियों को राजभाषा का प्रशिक्षण देने के लिए अधिकृत नहीं की गई है। राजभाषा विभाग के अंतर्गत प्रशिक्षण केंद्र पहले से ही देश भर में काम कर रहे हैं जो केंद्र सरकार के अधिकारियों व कर्मचारियों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण नि:शुल्क देते हैं एवं राजभाषा पर विचार-विमर्श के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करते हैं। राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुसार केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों द्वारा संबंधित कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर 'लीला' राजभाषा के माध्यम से अंग्रेजी के अतिरिक्त 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण ऑनलाइन दिए जाने की सुविधा उपलब्ध है। अतः गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा आयोजित किए जा रहे राजभाषा के प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए सरकारी कोष से अनावश्यक धन खर्च करना उचित नहीं है।

17. विभिन्न कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के संबंध में नए दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। नए दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्यशाला की न्यूनतम अवधि एक कार्य दिवस की होगी। कार्यशाला में न्यूनतम दो तिहाई समय कार्यालय से संबंधित विषयों पर हिंदी में कार्य करने का अभ्यास करवाने में लगाया जाए।

18. केंद्र सरकार के कार्यालयों की मांग पर केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से भी हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

19. केंद्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंककों व हिंदी आशुलिपिकों से संबंधित निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिए जाते, तब तक उनमें केवल हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक ही भर्ती किए जाएं।

20. अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में अनिवार्य अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अनुवाद के प्रशिक्षण के लिए नामित किया जा सकता है, जिन्हें स्नातक स्तर पर हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान हो तथा जिनकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय द्वारा अनुवाद कार्य के लिए किया जा सकता है।

21. अनुवादकों को, मानक शब्दकोश (अंग्रेजी-हिंदी व हिंदी-अंग्रेजी) तथा अन्य तकनीकी शब्दावलियों के रूप में सहायक सामग्री उपलब्ध कराई जाए।

22. भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है ताकि सरकारी कामकाज में वे इसका प्रयोग कर सकें। तथापि, अधिकांश अधिकारी सेवा में आने के पश्चात सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग नहीं करते। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों में सही संदेश नहीं जाता। परिणामस्वरूप, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अपेक्षित मात्रा में नहीं हो पाता। केंद्र सरकार के कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वे सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन में गति आएगी।

23. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का अपने संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में भी व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सकें और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो।

24. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय अपने दायित्वों से संबंधित विषयों से संबधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

25. केंद्र सरकार के कार्यालय अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। इन पत्रिकाओं में कार्यालय की सामान्य गतिविधियों तथा उस कार्यालय के कामकाज से संबंधित मौलिक आलेख प्रकाशित किए जाएं। साथ ही राजभाषा नीति के प्रमुख प्रावधानों का भी उल्लेख अवश्य हो। केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन पत्रिकाओं के ई-वर्जन तैयार करें और इन्हें राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए प्लेटफॉर्म "ई-पत्रिका पुस्तकालय" पर अपलोड करें ताकि गृह-पत्रिकाएं पाठकों को सहज तरीके से प्राप्त हो सकें।

26. यह देखा गया है कि अनेक विभागों द्वारा वेबसाइट पर या तो सूचना हिंदी में नहीं दी जाती या कुछ मामलों में यह पूर्णतया हिंदी में उपलब्ध नहीं है। अतः वेबसाइट हिंदी में विकसित और नियमित रूप से अद्यतित करवाएं।

27. राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से हर वर्ष कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए 5 दिवसीय बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करवाया जाता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अधिक से अधिक अधिकारियों/ कर्मचारियों को नामित करें। प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा होने के बाद प्रशिक्षु कंप्यूटर पर हिंदी में काम कर सकेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की वेबसाइट www.chti.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है।

28. राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना

राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने हेतु राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2025-26 से हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन एवं हिंदी में अनूदित पुस्तक हेतु संशोधित "राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना" लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत भारत के नागरिकों को निम्नलिखित श्रेणियों और विषयों पर पुरस्कार दिए जाएंगे:-

(1) इंजीनियरी, इलेक्ट्रॉनिक्स, कंप्यूटर विज्ञान, भौतिकी, जीव विज्ञान, ऊर्जा, विज्ञान, आयुर्विज्ञान, रसायन विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, मनोविज्ञान तथा समसामयिक विषय जैसे उदारीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद, मानवाधिकार, प्रदूषण, पर्यावरण विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(2) विधि और पुलिस अनुसंधान, न्यायालयिक विज्ञान, अपराधशास्त्र और पुलिस प्रशासन आदि विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(3) संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर आदि पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(4) 'ग' क्षेत्र के लेखक द्वारा हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार (उपर्युक्त सभी श्रेणियों के विषयों पर)।

(5) हिंदी में अनूदित पुस्तकों हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार - कालजयी साहित्य (क्लासिक्स) तथा संस्कृति, कला, धरोहर संबंधी विषयों से संबंधित अनूदित पुस्तकों के लिए।

पुरस्कार विवरण:

	पुरस्कार योजना का नाम	कुल पुरस्कारों की संख्या	देय राशि, प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
क	इंजीनियरी, इलेक्ट्रॉनिक्स, कंप्यूटर विज्ञान, भौतिकी, जीव विज्ञान, ऊर्जा, अंतरिक्ष विज्ञान, आयुर्विज्ञान, रसायन विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, मनोविज्ञान तथा समसामयिक विषय जैसे उदारीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद, मानवाधिकार, प्रदूषण पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार	प्रथम पुरस्कार (एक)	₹2,00,000/- (दो लाख रुपये), प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
		द्वितीय पुरस्कार (एक)	₹1,25,000/- (एक लाख पच्चीस हजार रुपये), प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
		तृतीय पुरस्कार (एक)	₹75,000/- (पचहत्तर हजार रुपये), प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
		प्रोत्साहन पुरस्कार (तीन)	₹40,000/- (चालीस हजार रुपये), प्रोत्साहन प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
ख	विधि और पुलिस अनुसंधान, न्यायालयिक विज्ञान, अपराधशास्त्र और पुलिस प्रशासन आदि विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।	प्रथम पुरस्कार (एक)	₹1,50,000/- (एक लाख पचास हजार रुपये) प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
		द्वितीय पुरस्कार (एक)	₹1,00,000/- (एक लाख रुपये) प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
		प्रोत्साहन पुरस्कार (दो)	₹40,000/- (चालीस हजार रुपये), प्रोत्साहन प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
ग	संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर आदि पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।	प्रथम पुरस्कार (एक)	₹1,50,000/- (एक लाख पचास हजार रुपये) प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
		द्वितीय पुरस्कार (एक)	₹1,00,000/- (एक लाख रुपये) प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
		प्रोत्साहन पुरस्कार (दो)	₹40,000/- (चालीस हजार रुपये), प्रोत्साहन प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
घ	'ग' भाषा क्षेत्र के लेखक द्वारा हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार (उपर्युक्त सभी श्रेणियों के विषयों पर)।	प्रथम पुरस्कार (एक)	₹1,50,000/- (एक लाख पचास हजार रुपये) प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
		द्वितीय पुरस्कार (एक)	₹1,00,000/- (एक लाख रुपये) प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
		प्रोत्साहन पुरस्कार (दो)	₹40,000/- (चालीस हजार रुपये), प्रोत्साहन प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
ङ	हिंदी में अनूदित पुस्तकों हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार - कालजयी साहित्य (क्लासिक्स) तथा संस्कृति, कला, धरोहर संबंधी विषयों से संबंधित अनूदित पुस्तकों के लिए।	प्रथम पुरस्कार (एक)	₹1,50,000/- (एक लाख पचास हजार रुपये) प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
		द्वितीय पुरस्कार (एक)	₹1,00,000/- (एक लाख रुपये) प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न
		प्रोत्साहन पुरस्कार (दो)	₹40,000/- (चालीस हजार रुपये), प्रोत्साहन प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न

29. राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना:

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2025-26 से संशोधित "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" योजना जारी की गई है। इस योजना के अंतर्गत अब निम्नलिखित को पुरस्कृत किया जाएगा:

1.मंत्रालय/विभाग
2.सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम
3.बोर्ड/ स्वायत्त निकाय/ ट्रस्ट आदि
4.राष्ट्रीयकृत बैंक
5.विभागीय हिंदी पत्रिका
6.नराकास (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

2.राजभाषा नीति के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप राजभाषा के प्रयोग में बेहतर प्रगति दर्ज करने वाले मंत्रालयों, विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, बोर्डों/स्वायत्त निकायों/ट्रस्टों, आदि को पुरस्कार स्वरूप राजभाषा शील्ड देकरसम्मानित किया जाएग। इसके अंतर्गत हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर निम्नानुसार पुरस्कार दिए जाएंगे:-

श्रेणी	**विवरण**	**पुरस्कार**
मंत्रालय/विभाग	300 से कम कार्मिक 300 से अधिक कार्मिक	03 पुरस्कार 03 पुरस्कार
सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम	'क' क्षेत्र 'ख' क्षेत्र 'ग' क्षेत्र	03 शील्ड 03 शील्ड 03 शील्ड
बोर्ड, स्वायत्त निकाय, ट्रस्ट आदि	'क' क्षेत्र 'ख' क्षेत्र 'ग' क्षेत्र	02 शील्ड 02 शील्ड 02 शील्ड
राष्ट्रीयकृत बैंक	800 से कम कार्मिक 800 से अधिक कार्मिक	03 पुरस्कार 03 पुरस्कार
विभागीय हिंदी पत्रिका	'क' क्षेत्र 'ख' क्षेत्र 'ग' क्षेत्र	02 पुरस्कार 02 पुरस्कार 02 पुरस्कार
नराकास - नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	'क' क्षेत्र 'ख' क्षेत्र 'ग' क्षेत्र	02 शील्ड 02 शील्ड 02 शील्ड

30. राजभाषा विभाग ने अपनी वेबसाइट पर विभिन्न संस्थाओं के लिंक उपलब्ध कराए हैं जिनके माध्यम से इन संस्थाओं की शब्दावली देखी जा सकती है। इस संबंध में यदि कार्यालयों द्वारा कोई अपनी शब्दावली तैयार की गई है तो वे उसे राजभाषा विभाग से साझा करें ताकि अन्य कार्यालय भी लाभान्वित हो सकें।

31. राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर "ई-सरल हिंदी वाक्यकोश" शीर्षक के अंतर्गत सामान्यत: अंग्रेजी में प्रयोग होने वाले वाक्यों के हिंदी अनुवाद दिए गए हैं जिनके प्रयोग से अधिकारी फाइलों पर सामान्य टिप्पणियां आसानी से हिंदी में लिख सकते हैं।

32. अंतरराष्ट्रीय संधियों और करारों को अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराया जाए। विदेशों में निष्पादित संधियों और करारों के प्रामाणिक अनुवाद तैयार कराकर रिकॉर्ड के लिए फाइल में रखे जाएं।

33. हिंदीतर राज्यों में बोर्ड, साइन बोर्ड, नामपट्ट तथा दिशा संकेतकों के लिए क्षेत्रीय भाषा, हिंदी तथा अंग्रेजी, इसी क्रम में, प्रयोग की जानी चाहिए ।

34. प्रशिक्षण और कार्यशालाओं सहित राजभाषा हिंदी संबंधी कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालय में बैठने के लिए अच्छा व समुचित स्थान एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएं ताकि वे अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक तरह से कर सकें।

35. हमें अपने कार्य-व्यवहार में आम जीवन में प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए ताकि सामान्य नागरिक सरकारी नीतियों/ कार्यक्रमों के बारे में सरल हिंदी में जानकारी प्राप्त कर सकें।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को **70%** 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति **100%**	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को **60%** 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **90%**	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को **60%** 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को **60%** 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को **60%** 4.ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **60%**
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	**80%**	**55%**	**35%**
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	**75%**	**65%**	**35%**
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	**80%**	**70%**	**45%**
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	**70%**	**60%**	**35%**
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**

9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक,ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक),	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	

15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**45%**	35%	25%

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, "ख" क्षेत्र में 30% और "ग" क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए ।



प्रशासनिक शब्दावली

अंग्रेजी में	हिंदी में
Pr. Accountant General	प्रधान महालेखाकार
Sr. Dy. Accountant General	वरिष्ठ उप महालेखाकार
Dy. Accountant General	उप महालेखाकार
Sr. Accountants Officer	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
Sr. Audit Officer	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
Assistant Accounts Officer	सहायक लेखा अधिकारी
Assistant Audit Officer	सहायक लेखापरीक्षा अधिकाररी
Accountant	लेखाकार
Auditor	लेखापरीक्षक
Sr. Accountant	वरिष्ठ लेखाकार
Sr. Auditor	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
Supervisor	पर्यवेक्षक
Pay and Accounts Officer	वेतन एवं लेखा अधिकारी
Audit	लेखापरीक्षा
For approval please	अनुमोदनार्थ
Seen and returned with thanks	देखकर सधन्यवाद वापस किया जाता है
We have no further comments	हमें आगे और कुछ नहीं कहना है
The case is concerned with.....section	यह मामला ....अनुभाग से संबंधित है
This requires administrative approval	इसके लिए प्रशासनिक अनुमोदन आवश्यक है
Orders may be issued	आदेश जारी कर दिए जाएं
Timely compliance may be ensured	समय पर अनुपालन सुनिश्चित किया जाए
Please discuss	कृपया चर्चा करें
Facts of the case may be furnished	मामले के तथ्य पेश करें
Orders may be issued	आदेश जारी किए जाएं
Issue reminder urgently	तुरंत अनुस्मारक भेजें
As above	जैसा ऊपर दिया गया है
As per rules	नियमानुसार
As proposed	यथा प्रस्तावित

As amended	यथा संशोधित
For perusal	अवलोकन के लिए
For onwards action	आगे भेजने के लिए
Please put up	कृपया प्रस्तुत करें
Please inform immediately	तुरंत सूचित कर दें
Passed for payment	भुगतान के लिए पास
For disposal	निपटान के लिए
For further action	आगे की कार्रवाई के लिए
No further action is necessary	आगे कोई कार्रवाई आवश्यक नहीं
Copy enclosed	प्रतिलिपि संलग्न है
Tour programme	दौरा कार्यक्रम
Submitted orders please	आदेशार्थ प्रस्तुत
Submitted for approval please	अनुमोदनार्थ प्रस्तुत
Kindly accord concurrence	कृपया सहमति प्रदान करें
Kindly review the case	कृपया मामले की समीक्षा करें
Explanation may be called for	स्पष्टीकरण मांगा जाए
Show case notice	कारण बताओ सूचना
Copy enclosed for ready reference	संदर्भ के लिए प्रति संलग्न है
As per details below	नीचे दिए गए ब्यौरे के अनुसार
To be followed	अनुसरण किया जाए
Letter of request	अनुरोध पत्र
Resolution	संकल्प
Should be given top priority	परम अग्रता दी जाए
Coordination committee	समन्वय समिति
For signature	हस्ताक्षर के लिए
The final bill is not in the prescribed form	अंतिम बिल निर्धारित प्रपत्र में नहीं है
As early as possible	यथाशीघ्र
For sympathetic consideration	सहानुभूति पूर्वक विचार करने के लिए

ऑडिट दिवस-2025 के दौरान आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रमों के कुछ चित्र








आडिट दिवस


AUDIT DIWAS
WORKSHOP FOR WOMEN'S NGO'S ON
INCLUSIVE WORKPLACE PRACTICES




ऑडिट दिवस
AUDIT DIWAS
CLOSING CEREMONY
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL, J&K, SRINAGAR


ऑडिट दिवस
IWAS 2025
SING CEREMO
OUNTANT GENERAL, J&K




CULTU
OFFICE OF TH






ऑडिट दिवस
AUDIT DIWAS


ऑडिट दिवस
AUDIT DIWAS


ऑडिट दिवस
AUDIT DIWAS 2025




ऑडट दिवस
AUDIT DIWAS
SRINAGAR









इशिता राठी सुपुत्री श्री पी.के. राठी, उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी) द्वारा निर्मित स्कैच